ISSN : 2454-2121

सदीनामा

सोच में इज़ाफे की पत्रिका

वर्ष-17 ❐ अंक-10 ❐ 1 से 31 अगस्त, 2017 ❐ पृष्ठ-16+4 ❐ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 ❐ मूल्य-5.00 रुपए

एक संस्कृति का संहार चल रहा है कश्मीर में

आपके सुझावों का स्वागत है –सं०

–अग्निशेखर

यह कितनी चिंताजनक बात है कि धर्मनिरपेक्ष भारत में कश्मीरी पंडितों को पहले अपनी मातृभूमि से धर्म के आधार पर पाकिस्तान समर्थित जिहादी 'जीनोसाइड' का शिकार बनाया, उनके बारे में झूठ फैलाया, उनके शैक्षणिक धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थानों को हथियाने या उनके बारे में विवाद खड़े कर कई कई प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक तीर्थ बलात हथिया कर उन्हें मुस्लिम जियारतों और मस्जिदों में बदलने का पुराना क्रम भी थमा नहीं है। गुफा और काजीगुंड के पास ऐतिहासिक वासुकि कुंड को मुस्लिम जियारतें घोषित करना ताजा उदाहरण है।

कुल मिलाकर कश्मीर को 'दारुल इस्लाम' बनाने की विचारधारा इस बात पर तुली है कि वहाँ से कश्मीर में चौदहवीं सदी से इस्लाम आने से पूर्व का चिह्न न बचे जो भारतीय हो।

इसलिए धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों के नाम बदले जा रहे हैं। जैसे श्री नगर में शंकराचार्य पर्वत को 'तख्त-ए-सुलेमान', बल्कि मगध नरेश सम्राट अशोक द्वारा बसाये इतिहास प्रसिद्ध श्रीनगर को 'शहर-ए-खास' कर दिया गया।

फिलहाल श्रीनगर के निचले भू-भाग यानी डाउन-टाउन को ही यह नाम दिया गया। हालाँकि कश्मीर के सैकड़ों प्राचीन गाँवों, कस्बों, नदियों, तीर्थों के नाम बदल दिए गये थे। वो एक सरकारी शुरूआत थी।

यह कश्मीर की हजारों वर्ष पुरानी सभ्यतागत और सांस्कृतिक स्मृति को लूटने की दिशा में पहला कदम कहा जा सकता है। धीरे धीरे किस तरह कश्मीर के इतिहास को बदलकर नये ढंग से लिखा जा रहा है, इसे अलग से विस्तार से लिपिबद्ध किया जा सकता है। कश्मीरी भाषा की देशज शब्दावली की जगह फारसी और अरबी शब्दों के प्रचलन को बढ़ावा देना इसी षड़यंत्र का हिस्सा है। कश्मीर में यह यों ही नहीं है कि सदियों से लोकप्रिय 'खुदा' शब्द अब जगह 'अल्ला हाफिज' कहना आम हो गया है। अगर ध्यान से देखा जाए तो कश्मीर में सूफी कवि शेख नूरुद्दीन नूरानी उर्फ नुंदऋषि के नाम पर स्थापित सृजन पीठ में यह काम एक योजनाबद्ध नुंदऋषि नाम भी अस्पृश्य सा मानकर उसे शेख नरुद्दीन नूरानी सम्मान सूचक विशेषण से संबोधित करना भी सायास कर्म है।

यह उस कश्मीरी 'ऋषियत' जिसे बाद में कश्मीरियत कहा गया के निषेध की कारुणिक कथा है। और त्रासदी यह कि सहिष्णु और सौहार्द के उदात्त मुहावरे वाली 'कश्मीरियत' में बदला गया और अब 'इस्लामियत' में। क्या कोई विश्वास कर सकता है कि कश्मीरी भाषा के कतिपय शब्दों के उच्चारण से आप बोलने वाले का धर्म समझ सकते हैं। कश्मीरी में बिल्ली को 'ब्योर' भी कहा जाता है। 'ब्रोर' कहने से आप कश्मीरी पंडित और 'ब्योर' कहने से आप मुसलमान हैं।

इसी तरह कश्मीरी पंडित दस को 'दह' कहेंगे और मुसलमान जानबूझकर 'दह' न कहकर 'दाह' कहेंगे। यह आपको रोचक लगेगा। इस विभेद का कोई भाषा वैज्ञानिक सिद्धांत नहीं। यह अपने को कश्मीरी मूल से यथासंभव अलग करने की हताश मानसिकता प्राकृत से निकली भाषा है इसलिए यह भी चिढ़ है। इसलिए इसके मौलिक भाषा स्वरूप को फारसी बहुल शब्दों में परिवर्तित करने का क्रम जारी है। इस पृष्ठ भूमि में कश्मीरी भट्ट (पंडित या हिन्दू) उनके लिए भारत की सभ्यतागत निरंतरता का प्रतीक है। उनकी संस्कृति, उनके धर्म, तीर्थ, तीज-त्यौहार,

शेष पृष्ठ 23 पर

सम्पादकीय

फिर से पास फेल चालू

शिक्षा मौलिक अधिकर होने के कारण और लंबे समय बाद इसे कानून रूप में परिणित करने तथा लागू होने के कारण बहुत सारे बिन्दु अधूरे रह गए। आज पूरे देश में क्लास 1 से 8 तक अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। पर यह सब सरकारी स्कूलों तक ही लागू है प्राइवेट स्कूल के लिए 25 प्रतिशत गरीबों के लिए नि:शुल्प शिक्षा का प्रावधान है। पर यह भी पूरी तरह लागू नहीं। बंगाल में शिक्षा के लिए राजनैतिक दल हमेशा मुद्दा ढूढ़ते रहते हैं। क्लास 1 से इंग्लिश लागू करने के लिए वामपंथी सक्रिय रहे और बाद में यह हुआ भी। कांग्रेसनीत पिछली सरकार ने इस शिक्षानीति का मसौदा बनाया था। जिसमें एक प्रावधान था फेल पास बन्द करना। बंगाल की राजनीतिक पार्टी SUCI ने फेल पास का लगातार विरोध किया। मेरे व्यक्तिगत अनुभव में कई प्राइवेट स्कूल ने फेल पास बन्द नहीं किया। कई अभिभावक बहुत दौड़े पर बच्चे पास नहीं हुए। बंगाल में एक मुद्दा और रहा कि हिन्दी में प्रश्नपत्र का। यहाँ क्लास 10 का प्रश्नपत्र इंग्लिश में आता था। जो कई मोर्चों से निकल कर अंत में जाते जाते वाममोर्चा की सरकार लागू कर गयी। क्लास 12 का मुद्दा अभी ठण्डबस्ते में है। SUCI के इस मुद्दे को केन्द्रीय सरकार गंभीरता से ली हैं और फेल पास प्रथा फिर से लागू करने जा रही है।

बंगाल की राजधानी कोलकाता में हिन्दी और बंगाली स्कूल में बच्चों की संख्या दिन ब दिन घट रही है। कारण अंग्रेजी शिक्षा का मोह और इन स्कूलों में ठीक से पढ़ाई न होना और रोजगार का घटना है।

चलो अब पप्पू पास होने के लिए पढ़ेगा। याद करे उस विज्ञापन को जिसमें पप्पू के पास होने की बात थी। हमने कोशिश की थी कि इस मुद्दे पर हमे SUCI के सचिव से बात करें पर यह हो नहीं पाया।

वैसे सरकारी स्कूलों के मास्टरों के पास मर्दुमशुमारी भी शामिल है। मिड-डे मील अलग से अब सारे दिन खाना बनवाएं दाल, चावल का हिसाब रखें, थोड़ा सा उन्नीस-बीस होते ही जबाबदेही अलग से। ऊपर से अलग बेदर्द हाकिम मिल गया तो जबाब देते -देते परेशान। शिक्षा के मौलिक अधिकार के साथ दंड किसी भी रूप में गैरकानूनी, पढ़ाई अलग जेल की हवा भी खानी पड़ सकती है।

हम चाहेंगे की आप अपनी कोई राय सुझाव हो तो हमें लिखें।

जितेन्द्र जितांशु

संपादक मण्डल

उप-संपादक : **तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य**
संपादकीय सलाहकार: **यदुनाथ सेउटा**
संपादक : **जितेन्द्र जितांशु**
विशेष सहयोग : **आरती चक्रवर्ती, एच॰ विश्ववाणी तथा राजेन्द्र कुमार रुईया (अमेरिका) सभी अवैतनिक हैं।**

पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park,
Kolkata-700 033
West Bengal. India
☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

साहित्य

यौवन अवस्था आने तक
मुझे सिखा दिया गया,
'बेटा' अब तुम्हारा यौवन ही,
है तुम्हारा 'गहना'
और इसे हमेशा संभाल कर रखना
ये अलग बात है कि,
बेटा कहकर भी मुझे,
कभी बेटे सा न सम्मान मिला,
और न ही वो आजादी।
बल्कि मेरे यौवन अवस्था में
लगा दी गयी मुझ पर कई पाबंदी,
रात को तुम न घर से
बाहर जाया करो,
और हां जरा दुपट्टा ठीक से
लिया करो।
चलना तुम अपनी
नजरें झुका के,
भले ही लोग तुम्हें
बुरी नजर से,
क्यों न ताके,
बेहतर होता अगर सिखाया जाता
हमें भेड़ियों से लड़ना
तो देश में न होती कोई नैंसी,
और न ही कोई निर्भया,
सुरक्षित होती आज हर एक लड़की
और उसका यौवन रूपी 'गहना'

–लक्ष्मी कुमारी, जयपुर

विज्ञापन दरें :

पूरे देश के लिए एक समान

साईज		रु०
पूरा पेज	-	8000
आधा पेज	-	5000
एक चौथाई	-	3000

1 कॉ. × 1 से.मी. 250

विजय गौड़ के उपन्यास 'भेटकी' पर साहित्यिकी द्वारा आयोजित परिसंवाद

कोलकाता की सुपरिचित संस्था साहित्यिकी की ओर से 21 जून को भारतीय भाषा परिषद के सभाकक्ष में संस्था की संस्थापक सुकीर्ति गुप्ता की पुण्यतिथि के अवसर पर विजय गौड़ के नये उपन्यास 'भेटकी' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत करते हुए गीता दूबे ने दिवंगत अध्यक्ष की स्मृति को नमन किया। विद्या भंडारी ने सुकीर्ति जी की 'घर' कविता की आवृत्ति की। विजय गौड़ ने उपन्यास के चुनिंदा अंशों का भावपूर्ण पाठ किया। रेणु गौरीसरिया ने कहा कि 'भेटकी' अति यथार्थवादी उपन्यास है जिसमें रूपक कथा के माध्यम से जीवन की विसंगतियों को उद्घाटित किया गया है। मुख्य वक्ता नीलकमल ने कहा कि आलोच्य उपन्यास भूमंडलीकरण और उदार आर्थिक नीतियों के परिप्रेक्ष्य में मानवीय संबंधों के छीजने की विडंबना को दिखाता है। पिछले तीस पैंतीस वर्षों के हिन्दुस्तान की तस्वीर दिखाता यह उपन्यास माफिया और दलालों के उस जाल की ओर इंगित करता है जिनके फंदे में फंसकर आम आदमी बुरी तरह छटपटा रहा है। अध्यक्षीय वक्तव्य में किरण सिपानी ने इसे अपने समय के संकटों को उद्घाटित करनेवाला उपन्यास कहा। रश्मि भारती ने कहा कि यह अपने समय के क्रूर यथार्थ को दर्शाता है। कार्यक्रम का संचालन गीता दूबे और धन्यवाद ज्ञापन इतु सिंह ने किया। यह जानकारी **गीता दूबे**, सचिव साहित्यिकी ने दी।

क्या आपको लगता है यह पत्रिका नियमित छपनी चाहिए अगर हाँ तो हर तरह के सहयोग के लिए हाथ बढ़ाएं इस माह हाथ बढ़ाने वाले–

- **बद्रीनारायण सिंह**
- **दीना बेन सेठ**
- **रेखा वाजपेयी**
- **शीला अवस्थी**
- **सौरभ झुनझुनवाला**
- **कुलदीप दीक्षित**

समीक्षा

'गोडसे @ गाँधी.कॉम' नाटक में गाँधी के ब्रह्मचर्य संबंधी सिद्धान्त

गाँधी की मृत्यु के पश्चात भी गाँधी हम सब भारतीय लोगों में रचे बसे दिखाई देते हैं। शायद गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दुनिया में सबसे अधिक लिखा गया है और लिखा जा रहा है। असगर वजाहत ने भी प्रस्तुत नाटक के माध्यम से गाँधी के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों को तथा विचारों को काल्पनिक वस्तु के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है। गाँधी के विचारों और व्यक्तित्व ने किस तरह से तमाम भारतीयों को प्रभावित किया है, इसे स्पष्ट करते हुए नाटककार भूमिका में लिखते हैं– "अपनी अकाल मृत्यु की आधी शताब्दी से अधिक समय बीत जाने के बाद भी महात्मा (मोहनदास करमचंद गाँधी) भारतीय समाज में ऐसी चट्टान की तरह खड़े हैं, जिससे टकराये बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता। गाँधी की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है; बल्कि कहना चाहिए कि आधी शताब्दी बाद वे अधिक प्रासंगिक दिखाई पड़ने लगे हैं। गांधी के पक्ष और विपक्ष में जितना लिखा गया है, उतना शायद ही किसी आधुनिक भारतीय के बारे में लिखा गया हो। गाँधी की अलग-अलग ढंग से व्याख्या करता था उनका पुन: पाठ इसलिए संभव है कि गाँधी अपनी महानता के बावजूद कुछ बहुत 'छोटे और टुच्चे' विश्वासों, विचारों से अपने को मुक्त न करा सके थे। उनके विचारों तथा व्यक्तित्व में अपार अंतर्विरोध भरे पड़े हैं।"

प्रस्तुत नाटक के माध्यम से ऐसे ही अंतर्विरोधों को तथा गाँधी के अपने हठ को प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। नाटक में प्रस्तुत विषयों में प्रमुख है– गाँधी के स्त्री-पुरुष संबंध तथा ब्रह्मचर्य के सिद्धान्त, धर्म तथा जाति संबंधी धारणा, गाँधी का संवाद के रास्ते चलने पर बल, कर्म तथा देशसेवा का संदेश, राजनीति व्यंग्य, प्रयोग आश्रम की संकल्पना एवं स्वराज के प्रयोग, सत्य, अहिंसा पर विश्वास, सामान्य और उदारता का संदेश। जिस तरह से गाँधी की संकल्पना एवं स्वराज के प्रयोग, सत्य, अहिंसा पर विश्वास, सामान्य और उदारता का संदेश। जिस तरह से गाँधी के सामान्य तथा विशेष व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है ठीक उसी भाँति नाथूराम गोडसे की हिन्दू कट्टरता वाली छवि को भी प्रभावी ढंग से नाटककार ने चित्रित किया है। विचारों को विचारों द्वारा ही उत्तर दिया जाता है तथा जीवन में विवेक को अनन्य स्थान देना चाहिए। इसे भी गाँधी और गोडसे के संवादों के माध्यम से समझाने का सफल प्रयास नाटककार ने किया है।

गाँधी जी जिस तरह से हठ को लेकर प्रसिद्ध हैं। उसी तरह से उन्होंने आदर्श ब्रह्मचर्य संबंधी जो विचार-प्रयोग किए हैं, उससे भी वे उतने ही चर्चित हैं। प्रस्तुत नाटक में असगर वजाहत ने गाँधी के ब्रह्मचर्य संबंधी विचारों को अपनी रचना द्वारा वाणी देकर पाठक एवं दर्शकों को सोचने के लिए बाध्य किया है। गाँधी जीवन में ब्रह्मचर्य को महत्व देते हुए दर्शाए हैं तथा अपने अनुयायियों पर इन विचारों को थोपते हुए भी दर्शाए गए हैं। काम को लेकर उनके विचार और आदर्श वैवाहिक जीवन संबंधी ब्रह्मचर्य का आग्रह गाँधी करते हुए दिखाए गए हैं। वैसे देखा जाए तो गाँधी के ब्रह्मचर्य संबंधी प्रयोगों को लेकर खूब सकारात्मक, नकारात्मक विमर्श हुए हैं, हो रहे हैं और आगे भी होंगे। गाँधी का व्यक्तित्व ही ऐसा सुलझा और उलझा हुआ है कि उन्हें लेकर प्रत्येक पीढ़ी और युग में विमर्श होते रहेंगे। यही उनके व्यक्तित्व की महानता को सिद्ध करता है। गाँधी के ब्रह्मचर्य संबंधी विचारों को नाटककार ने प्रमुख रूप से अभिव्यक्ति दी है। इस संदर्भ में वे नाटक की भूमिका में लिखते हैं– "नाटक का एक पक्ष गाँधी के ब्रह्मचर्य संबंधी..... अपने इन विचारों के लिए गाँधी की कड़ी आलोचना की जाती है। नाटक में सुषमा और नवीन इस दिशा में कथानक को आगे बढ़ाते हैं। गाँधी को जब पता चलता है कि सुषमा नवीन से प्रेम करती है तो वे उसे 'प्रयोग आश्रम' से निकाल देना चाहते हैं। सुषमा के माफी माँग लेने के बाद उसे सशर्त रहने की अनुमति देते हैं, लेकिन सुषमा और नवीन का प्रेम कम नहीं होता। गाँधी आक्रामक रवैया अपनाते हैं। इसी संदर्भ में वे एक रात कस्तूरबा को सपने में देखते हैं और पुनर्विचार करने की जरूरत महसूस होती है। नाटक के गाँधी ब्रह्मचर्य, विवाह, स्त्री-पुरुष संबंधों के संदर्भ में अपने विचारों में ढील देते दिखाई पड़ते हैं।"

समीक्षा

नाटक में सुषमा जो गाँधी की अंधभक्त है। बचपन से ही उसकी इच्छा थी की गाँधी जी के साथ कार्य करें आदि....आदि। जब उसे इस तरह का मौका मिल जाता है तो वह बहुत खुश है किन्तु उसकी परेशानी यह है कि जिसे वह चाहती है, वह यानि नवीन दिल्ली कॉलेज में अंग्रेजी का प्राध्यापक है। उसे गाँधी साथ रहने की इजाजत नहीं देते हैं। सुषमा गाँधी के साथ 'प्रयोग आश्रम' में चली जाती है। 'प्रयोग आश्रम' में गाँधी आदर्श ब्रह्मचर्य का संदेश भी सभी को देते हैं। अब सुषमा और नवीन का मिलना बंद हो जाता है बावजूद इसके नवीन सुषमा को पत्र लिखते रहता है। एक दिन गाँधी को डाक द्वारा आयी हुई डाक में रंगीन लिफापे में पत्र दिखाई पड़ता है, उसे पढ़ते हैं– 'सुषमा शर्मा, केयर ऑफ महात्मा गाँधी, राँची बिहार, लिफाफा खोलते हैं। लाल रंग के कागज का खत है।' मेरी जान से प्यारी सुषमा, तुम्हें हजारों प्यार .... तुम्हारे चले जाने के बाद कई दिन तक तो मैं होश में ही नहीं रहा.... अब लगता है कि यह सहन नहीं कर पाऊँगा। माफ करना मुझे, मुझे लगता है कि हमारे प्रेम के बीच में महात्मा जी आ गये हैं।" (पृष्ठ- ३६) पत्र पढ़ने के बाद गाँधी को इस बात का एहसास होता है कि दोनों को प्रेम अब भी शुरू है। उनके 'प्रयोग आश्रम' में ब्रह्मचर्य के आदर्शों को उनके ही अनुयायी कुचल रहे हैं। गाँधी की दृष्टि से सुषमाने ब्रह्मचर्य का पालन नहीं किया है, परिणामत: उसे यहाँ रहने का कोई भी नैतिक अधिकार नहीं है। गाँधी उसे कहते हैं– "तुमने आश्रम का अनुशासन भंग किया है... लगता है ये मेरे ही पाप हैं जो मेरे सामने आ रहे हैं... यहाँ ब्रह्मचर्य पालन करने के लिए भगीरथ प्रयास किए जा रहे हैं... यहाँ गंदगी, सड़न, कुविचार, काम के लिए लालसा... मैं इतनी गंदगी में नहीं जी सकता... न मैं दूसरों को इस नरक में रखना चाहता हूँ... तुमने मर्यादा को भंग किया है.... तुम्हें प्रायश्चित करना पड़ेगा...." (पृष्ठ-36-37) गाँधी ब्रह्मचर्य के अपने प्रयोग में यह भूल गए हैं कि उनके अनुयायियों की भी अपनी नीजी भावनाएं हैं। वे हर बात को थोपना चाहते हैं। अपने कई आदर्शों के प्रयोग को लागू करने में उन्होंने दूसरों के मन पर क्या गुज़रता होगा शायद इसका ध्यान नहीं रखा है। इसलिए गाँधी का ऐसा व्यवहार उन पर आलोचना का एक मौका प्रदान करता है।

सुषमा बापू की अंध भक्त है और नवीन को दिलो जान से चाहती है। उसके मन की व्यथा को बापू नहीं समझ पा रहे हैं किन्तु वह ऐसा आरोप उन पर नहीं करती है। नवीन भी बापू के ब्रह्मचर्य सिद्धान्त को नहीं समझ पा रहे हैं। उसके सामने यह सवाल है कि दुनिया में आज तक जिन लोगों ने प्यार किया है क्या उन सबके सम्बन्ध वासना, विकार और पाप थे ? गाँधी नवीन और सुषमा के प्रेमभाव पूर्ण बातों को सुनते हैं। उनकी दृष्टि से सुषमा अपना संयम खो रही है। ब्रह्मचर्य पालन उससे नहीं हो पाएगा। वे फिर उसे समझाते हुए कहते हैं– "मैं समझ सकता हूँ तुझे, सुषमा....तू आश्रम से चली जा..... वही कर जो नवीन कह रहा है...संयम से रहना तेरे बस की बात नहीं है...तेरी आँखों पर वासना की काली पट्टी चढ़ी है।" (पृष्ठ-45) गाँधी सुषमा को यह भी समझाते हैं कि वे ब्रह्मचर्य के उपासक हैं बावजूद तू यह नहीं जानती है कि मैं ब्रह्मचर्य का उपासक हूँ....उसके बाद भी..... तू अपने बिस्तर में साँप देखकर खामोश रही और तूने..." (पृष्ठ 45, 46) सुषमा के साथ गाँधी जी के इस व्यवहार को देखकर नवीन को गुस्सा आता है। वह गाँधीजी से बहस करता है। प्रतिक्रिया से बहुत कटु शब्दों में वे नवीन को अपने ब्रह्मचर्य के सिद्धान्त समझाते हुए 'बाहर से आए चोर' आदि.... कहते हैं। निर्मला देवी जो सुषमा की माँ है, बापू को दोनों के रिश्ते के बारे में सच बताती है फिर भी गाँधी अपने सिद्धान्तों पर अड़े रहते हैं। जीवन में ब्रह्मचर्य के महत्व को समझाते हुए वे निर्मला देवी से कहते हैं– "नियमों-सिद्धान्तों को छोड़कर जीवन आदमी को शोभा नहीं देता। औरत और मर्द का जन्म ब्रह्मचर्य पालन करते हुए परमात्मा में मिल जाना है।" (पृष्ठ-47) नवीन बापू को यहाँ तक बता देता है कि सभी लोगों के साधु-संत होने से संसार नहीं चल पाएगा। हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं। गाँधी की यह भी एक खाशियत रही है कि वे सत्य के पक्षधर रहे हैं किन्तु यहाँ नवीन और सुषमा की सच्चाई को वे क्यों नजरअंदाज कर रहे हैं ? प्रेम को वासना बताते हुए फिर उन्हें ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाते हैं, उनके प्रेम पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए कहते हैं – "प्रेम वासना के अलावा कुछ नहीं है और है तो उसमें त्याग और आध्यात्मिकता दिखाई देनी चाहिए.... तुम्हारा प्रेम, मुझे सच्चा प्रेम नहीं लगता.... प्रेम में 'छिपाव' का भाव उसे वासना और भोग के करीब ले जाता है।" (पृष्ठ-47) गाँधी का

मानना है कि ब्रह्मचर्य ही आदर्श विवाह है, विवाह भोग के लिए नहीं बल्कि संयम के लिए है। अपनी शर्त पर वे सुषमा को आश्रय में रहने की अनुमति देते हैं। यहाँ पर नाटककार ने गाँधी के ब्रह्मचर्य संबंधी प्रयोगों के हठ पर सोचने को मज़बूर किया है। क्या गाँधी अपने सिद्धान्तों की पूर्ति हेतु इतने कठोर एवं हठी इंसान थे? यदि नहीं तो वे सुषमा और नवीन को ऐसी शर्त में क्यों अटका देते? नवीन को वे कहते हैं– "तुम्हें सुषमा को अपनी सगी बहन मानना होगा... वो तुम्हें अपना सगा भाई स्वीकार करे.... तुम दोनों एकांत में नहीं मिलोगे....बात नहीं करोगे.... किसी तरह का कोई इशारा नहीं... कोई चिट्ठी-पत्री नहीं...लड़कियों के लिए....आदर्श अखंड ब्रह्मचर्य होना चाहिए....उसी में आदर्श विवाह समाया हुआ है।" (पृष्ठ–47,48) नवीन के प्रेम संबंधी कई तर्कपूर्ण जवाबों के बाद भी गाँधी अपने ब्रह्मचर्य संबंधी सिद्धान्तों पर अडिग रहते हैं। वे नवीन को मनुष्य जीवन में संयम का मूल्य बताते हैं। अंत: नवीन बापू को यह कहता है कि इसलिए उसे और सुषमा को बापू आशीर्वाद नहीं दे रहे हैं क्योंकि वे उनकी संतान नहीं हैं। गाँधीजी के आशीर्वाद देवदास और लक्ष्मी को मिल सकते हैं। किन्तु उन्हें नहीं क्योंकि वे उनकी संतान नहीं हैं। नवीन की ये बाते सुनकर बापू भावुक होते हैं। ये बातें उन्हें सोचने को मज़बूर करती हैं। प्रयोग आश्रम से निराश होकर जाने वाले नवीन को रोककर वे कहते हैं– "ठहरो... अपने प्रश्न का उत्तर सुनते जाओ...मैं यह नहीं चाहता कि 'प्रयोग आश्रम' से कोई असंतुष्ट जाये....देवदास और लक्ष्मी ने प्रेम के लिए त्याग किया था। बोलो, तुम कर सकते हो...पाँच साल प्रतीक्षा कर सकते हो.... पाँच साल?" (पृष्ठ-48)

गाँधी की यह शर्त सुनकर नवीन चला जाता है और सुषमा निराश होकर प्रयोग आश्रम में रहती है, सहती है, कुछ कहे बिना गाँधी को सब कुछ कहती है। नवीन के प्रति अनुराग धीरे-धीरे उसे कमज़ोर बना डालता है। उसका निस्तेज चेहरा और उदासी देखकर गाँधी अपने आदर्शों के प्रति थोड़ा सोच रहे हैं। नाटककार ने कस्तूरबा को गाँधी के सपने में उपस्थित कर यह दर्शाया है कि वे अपने कठोर निर्णय के प्रति थोड़े नरम होते जा रहे हैं। गाँधी सपने में यह देख रहे हैं कि कस्तूरबा उन्हें कह रही है कि ब्रह्मचर्य के अपने सिद्धान्तों के लिए स्त्रियों को दुख देना बंद करो। यह सुनकर गाँधी कस्तूरबा से माफी माँगते दिखाई देते हैं। उनकी बात काटकर कस्तूरबा उन्हें कहती है–"मुझसे माफी माँगकर क्या होगा? तुम्हें माफी तो जयप्रकाश और प्रभादेवी नारायण से माँगनी चाहिए... कि तुमने उनके वैवाहिक जीवन का सत्यानाश कर दिया था....सुशीला से माफी माँगो...मीरा से माफी माँगो... जो मेरी सौतन बनी रही.... हजारों अपमान झेले और पाया क्या? दूर क्यों जाते हो, अपने बेटों से माफी माँगो....देवदास और लक्ष्मी को तुमने कितना रुलाया है... और नाम बताऊँ? आभा और कनु....मुन्ना लाल और कंचन...." (पृष्ठ-53) कस्तूरबा उन्हें यहाँ तक बताती है कि सुषमा और नवीन के बीच दीवार बनकर गाँधी ही खड़े हैं। जो सुषमा उन्हें भगवान मानती है। तुम्हें मानने वालों के प्रति तुम्हारे मन में दया क्यों नहीं है?

इस तरह से कस्तूरबा के बहाने नाटककार ने गाँधी को आत्ममंथन करते दर्शाया है। अपने ब्रह्मचर्य के सिद्धान्तों के प्रति अंतत: गाँधी सोचते हैं और उनमें बदलाव नज़र आता है। प्यारेलाल द्वारा वे नवीन को संदेश भेजते हैं। (नाटक के अंत में सीन-17 में) जेल में ही नवीन और सुषमा की शादी की रस्में वे स्वयं पूरी करते हैं। स्वयं गाँधी मंत्र पढ़ते हैं। आशीर्वाद के रूप में नवविवाहित जोड़े को भेंट स्वरूप 'गीता' भी देते हैं। इस तरह से नाटककार ने गाँधी के ब्रह्मचर्य संबंधी सिद्धान्त को प्रमुख प्रतिपाद्य के रूप में प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. गोडसे @ गाँधी.कॉम–असगर वजाहत।

प्रो०डॉ० सदानंद भोसले
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे–07

आप अपनी रचनाएं भेजें

48/49 -A स्वीस पार्क,
कोलकाता- 700 033
☎ : 9231845289, 2470-4061,
E-mail : jjitanshu@yahoo.com,

स्मृति

कवि सम्मेलन के साथ याद किये गये कवि चन्द्रदेव सिंह

गत शनिवार एक जुलाई 2017 को सदीनामा, कैजन आर्टस् और आदर्श युवक संघ (आयुस) के तत्वावधान में स्व० कवि डॉ० चन्द्रदेव सिंह के जन्म दिवस पर चर्चा एवं कवि गोष्ठी का आयोजन काशीपुर स्थित आयुस भवन में किया गया। इस अवसर पर पहले सत्र में श्री नन्दलाल साव, इरफान बनारसी, प्रो० सत्य प्रकाश तिवारी, रमाशंकर सिंह, तारक दत्त सिंह, जितेन्द्र जितांशु, सोहेल खान सोहेल ने कवि चन्द्र देव सिंह के साथ बिताये संस्मरण साझा किया। इस सत्र का संचालन जितेन्द्र जितांशु ने किया। इस अवसर पर सदीनामा के नये अंक का भी विमोचन किया गया।

दूसरे सत्र में कवि गोष्ठी के अध्यक्षीय पीठ पर आसीन थे अतुल कुमार भराली, योगेन्द्र शुक्ल 'सुमन', सईद आजर, अम्बर सिद्दकी, सरर रासती थे। यहाँ पर जिन कवियों ने पाठ किया। जीवन सिंह, अतुल कुमार भराली, शम्भू लाल जालान, योगेन्द्र शुक्ल 'सुमन', जतीब हयाल, मीनाक्षी सांगनेरिया, मौसम, नसीम अकबर, इरफान बनारसी, शमीम सागर, युसुफ अख्तर, शकील गोंडवी, अशफाक अहमद अशफाक, अम्बर सिद्दकी, नूर हुसैन नूर, सरर रासती फौजिया अख्तर, सइद आजर, सोहेल खान सोहेल इत्यादि। दूसरे सत्र का मंच संचालन सरर रासती ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सोहेल खान सोहेल ने दिया। इस कार्यक्रम को सफल करने में साथ दिया रिंकू राजभर और मारिया शमीम ने।

पुस्तकें मिली

गाँधी : एक संक्षिप्त अवलोकन - लेखक : रंजीत कुमार

पुष्पक - प्रधान सम्पादक : डॉ० अहिल्या मिश्र

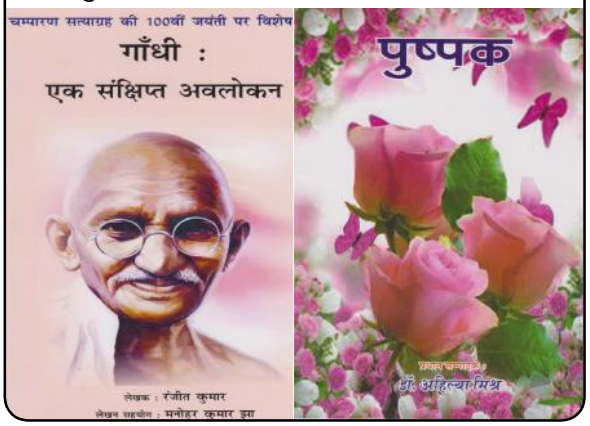

चीन ने बनाया हिन्दी को हथियार....!

चीन हमें आर्थिक और सामरिक मोर्चे पर ही मात देने की तैयारी नहीं कर रहा है बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी वह हमें पटकनी मारने पर उतारू है। उसने चीनी स्वार्थों को सिद्ध करनें के लिए अब हिन्दी को अपना हथियार बना लिया है। इस समय चीन की 24 लाख जवानों की फौज में हजारों जवान ऐसे हैं, जो हिन्दी के कुछ वाक्य बोल सकते हैं और समझ भी सकते हैं।

भारत-चीन सीमांत पर तैनात चीनी जवानों को हिन्दी इसलिए सिखाई जाती है कि वे हमारे जवानों और नागरिकों से सीधे बात कर सकें। उनका हिन्दी ज्ञान उन्हें जासूसी करने में भी जम कर मदद करता है। चीनी जवान भारतीय जवानों को हिन्दी में धमकाते हैं, चेतावनी देते हैं, गालियाँ काढ़ते हैं और पटाने का भी काम करते हैं। हमारे जवान तो क्या, फौजी अफसर भी उनके आगे बगलें झांकते हैं। उनके दुभाषिए दोनों फौजों के बीच संवाद करवाते हैं।

चीनी के लगभग 20 विश्वविद्यालयों में बाकायदा हिन्दी पढ़ाई जाती है। मैं चीन में ऐसे हिन्दी विद्वानों से भी मिला हूँ, जो हिन्दी में पीएच.डी. हैं और जिन्होंने अनेक शास्त्रीय काव्य-ग्रन्थों का चीनी अनुवाद किया है। मैं जब भी चीन जाता हूँ, चीनी सरकार से मैं हमेशा हिन्दी-चीनी दुभाषिए की मांग करता हूँ। जब प्रधानमंत्री नरसिंहराव चीन गए थे तो मैंने एक मित्र हिन्दी प्रोफेसर को उनका दुभाषिया तय करवाया था।

भारत का दुर्भाग्य है कि हमारे नेता भाषा के महत्व को नहीं समझते। वे अंग्रेजी को ही दुनिया की एक मात्र भाषा समझते हैं। वे भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री बनकर अकड़ दिखाने लगते हैं लेकिन उन्हें अंग्रेजी की गुलामी करते हुए शर्म नहीं आती।

भारत में चीनी भाषा जानने वाले 500 लोग भी नहीं है। इसीलिए हमारे व्यापारियों को चीन में हजारों रु० रोज के दुभाषिए रखने पड़ते हैं। अंग्रेजी वहाँ किसी काम नहीं आती। हमारी कूटनीति भी कई देशों में अधकचरी रहती है, क्योंकि हमारे राजदूत उन देशों की भाषा ही नहीं जानते। हमारे ये अर्धशिक्षित नेता कब समझेंगे कि भारत को यदि हमें महाशक्ति बनाना है तो एक नहीं अनेक विदेशी भाषाएं हमें नागरिकों को सिखानी होंगी और स्वभाषा को ही अपनी मुख्य भाषा बनानी होगी।

–vaishwikhindisammelan@gmail.com से प्राप्त

चिन्तन

निकल आएं धर्मों के मायाजाल से

एक दौर था जब भारतीय सिनेमा में ढेर सारी धार्मिक फिल्में बनायी गयीं। निरूपा राय और ललिता पवार उस समय देवियों के किरदार में मशहूर हो चुकी थीं। धार्मिक ग्रंथों के काल्पनिक किरदारों को पर्दे पर उतारा गया। चूंकि टेलिविजन की पहुँच सुलभ नहीं थी इसलिए सिनेमा के माध्यम से धर्म को लोगों के मन मस्तिष्क में इंजेक्ट किया जाता रहा। जिस विज्ञान का माखौल यह लोग उड़ाते रहे उसी के सहारे काल्पनिक कहानियों पात्रों को जीवंत कर लोगों को दिग्भ्रमित करना जारी रहा। जैसे ही टेलिविजन की पहुँच लोगों में बढ़ने लगी इन्हीं षड़यंत्रकारी लोगों ने धार्मिक सीरियल बनाना शुरू कर दिया जो पूरी डिटेल के साथ-साथ बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की दिशा में एक और कदम था।

मुझे याद है जब हमारे घर में पहली बार ब्लैक एण्ड ह्वाइट टेलिविजन आगमन हमलोगों की वजह से ही 1989 में हुआ तो उन दिनो रामानंद सागर का "रामायण" धारावाहिक जो रामायण न होकर "रामचरित मानस" था पूरे जोरों पर मशहूर हुआ। बाद में बी आर चोपड़ा के "महाभारत" ने संडे के दिन सड़कों को अपनी अवधि के दौरान सुनसान सा करना शुरू कर दिया। लोगों के मन मस्तिष्क पर धर्म और उससे जुड़ी काल्पनिक कहानियां अंकित होती जा रही थीं और उसको बनाने वाले अपनी जेंबे भर रहे थे 'एक पंथ दो काज।'

अंधविश्वास और अंधभक्ति से सराबोर समाज इन सीरियलों के माध्यम से वर्ण व्यवस्था को न केवल धीरे-धीरे सीख रहा था वरन उसके लिए मानसिक रूप से तैयार भी हो रहा था। गुलामों को गुलामी में जकड़े जाने का अहसास ही नहीं था बल्कि वह इसे स्वाभाविक मानकर आत्मसात करने को तैयार हो रहे थे। गीता प्रेस धड़ाधड़ धार्मिक किताबें छाप रही थी, जिन्हें धर्म ने कभी गुलामी तिरस्कार अपमान और अत्याचार के अलावा कुछ नहीं दिया था वह भी गीता रामायण पाठ करना शुरू कर दिये थे। घरों में रामचरितमानस का पाठ, अखण्ड रामायण, सत्य नारायण की कथा, जगराते अपनी पैठ बना रहे थे। लोग मोटे से मोटा कलावा बांधकर, लंबा तिलक लगाकर अलग ही सुखद अनुभूति प्राप्त कर रहे थे जैसे बकरे को हलाल होने से पहले खूब खिलाया पिलाया जाता था। लगातार नये-नये अंधविश्वास पर आधारित फिल्मों, नाटकों को बनाने की होड़ मची थी। लोग यह भी मानने लगे थे कि नागिन बदला लेती है और नाग से नागमणि प्राप्त की जा सकती है। एक आम ब्राह्मण भी खास होकर "पंण्डितजी" की श्रेणी प्राप्त कर चुका था।

हवन, यज्ञ, भूमि पूजन निजी से लेकर सरकारी प्रतिष्ठानों तक अपनी पैठ बना चुका था। जिसके लिए सबसे बड़ी मांग उस तथाकथित पण्डित की थी जो सिर्फ श्लोकों को आयतों की तरह रट्टा मारकर बैठा था भले ही उसे पता नहीं था कि श्लोक का वास्तविक मतलब क्या है क्या नहीं हालांकि किसी और को भी कहाँ परवाह रही थी। इसके बाद से लेकर आजतक अंधविश्वास और अंधश्रद्धा के बढ़ावे के लिए लगातार नाटक खेले जा रहे हैं रुपहले पर्दे पर और इसका सबसे आसान शिकार घर की सबसे महत्वपूर्ण सदस्या एक महिला ही बन रही है जिस पर एक बेहतर पीढ़ी की जिम्मेदारी होती है। इधर अंधविश्वास और अंधश्रद्धा के बादल घने हो रहे थे उधर रोज नये-नये बाबा दादी साधू संत महात्मा दीदी साध्वी तैयार हो रहे थे तो आम जनता को अध्यात्म और धर्म के जाल में फँसाकर लूटने को तैयार बैठे थे जिसमें पैसा और इज्जत दोनों शामिल था। उधर फर्जी कहानियों का प्रचार करने पर लगाये गये लोग मठो धार्मिक यात्राओं के चमत्कारी प्रभावों को प्रचारित कर रहे थे इधर मंदिरों मठों धार्मिक यात्राओं मानवीय भेड़ों की कतारें लग रही थी जिसमें हज यात्रा को भी शामिल किया जा सकता है। विश्वास इतना कि इन मंदिरों मठों मेलों धार्मिक यात्राओं और मेलों में सैकड़ों हजारों लोगों की जानें जाने के बाद भी लोगों का विश्वास डिगने की बजाय बढ़ता जा रहा था। लोगों को धर्म(धंधे) से विमुख न होने दिया जाये इसलिए आस्था, संस्कार, मदीना, पीस टीवी जैसे चैनलों की बाढ़ सी आ चुकी थी। लोग इस धर्म नाम की अफीम में मदमस्त हो चले थे। उन्हें बताया जा रहा था कि उनका ही धर्म एकमात्र सच्चा ईश्वरीय धर्म है वही आदि या वही अंत है। लोगों में धर्म की लगातार

असहिष्णुता बढ़ती जा रही थी। लोग एक दूसरे को इसी धर्म के नाम पर मारने को न केवल उतारू थे बल्कि मार भी रहे थे। आज भी टेलिविजन देखिए कैसे धर्म सीरियलों के माध्यम से लड़कियों महिलाओं में इंजेक्ट किया जा रहा है, कार्टूनों के माध्यम से आपके बच्चों के दिमागों में। धर्म प्रचार-प्रसार में जी जान से लगे रहेंगे। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि धर्मों के नाम पर फैलाये गये इस मायाजाल से लोग देर सबेर जरूर बाहर निकलेंगे। जरूरत है आजाद ख्याल और वैज्ञानिक सोंच रखने वालों की जिनका फर्ज है वह इस घुप्प अंधकार में ज्ञान विज्ञान की जोत जलाये रहें क्या पता आप किसी भटके राही को राह दिखाने में सफल हो जायें।

–संजीव सिंह

नोट – पोस्ट की लय के लिए इसे भूतकाल में लिखा गया है जबकि वर्तमान भी यही है। उम्मीद है हमारा भविष्य ऐसा नहीं होगा ... संजीव सिंह की वाल से

"दिशा" एक प्रयास मंदबुद्धि बच्चों के लिए

मैं, मारिया शमीम सदीनामा के सम्पादकीय विभाग में नई आई हूँ। मुझे "दिशा" नामक संस्था के बारे में जानकारी प्राप्त करने को कहा गया। मैंने इस संस्था की नींव को रखने वाले डॉ० रणजीत मंडल से सम्पर्क किया और उनसे मिलने का समय तय किया। फिर मैं दमदम स्टेशन से बारासात जाने वाली लोकल ट्रेन से बारासात गई। वहाँ से प्लेटफार्म 5 से आगे बढ़ने पर ऑटो स्टैण्ड है वहाँ से पायनर नामक तालाब के पास डॉक्टर रणजीत ने मुझे बुलाया था और फिर वहाँ से मुझे वे अपनी कार से उस जमीन को दिखाने ले गये जहाँ इस संस्था के निर्माण का कार्य चल रहा था। उस स्थान का नाम बारासात बारबरिया है और उसका माप 63 कठ्ठा है ये मुझे डॉ० मण्डल ने बताया। अभी "दिशा" अपना कार्य एक किराये के मकान से कर रही है। उन्होंने बताया कि उन्हें अपनी बच्ची जो कि विकलांग है उसकी चिन्ता हमेशा रहती है कि उनके गुजरने के बाद उनकी बच्ची की देखरेख कौन करेगा। फिर एक दिन उन्होंने इस समस्या का समाधान निकाला और एक विशेष घर का निर्माण करने का फैसला किया जहाँ सभी प्रकार के विकलांग बच्चों की आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध की जा सके। डॉ० मंडल ने बताया कि इस प्रोजेक्ट "दिशा" में बहुत से विकलांग बच्चों के माता-पिता भी जुड़े हैं और वे आर्थिक रूप से मदद भी करते हैं। इस प्रोजेक्ट के अनुसार सभी विकलांग बच्चों के लिए चिकित्सा, शिक्षा और उनकी देखरेख के सभी सुविधा को उपलब्ध कराई जायेगी। अगर किसी बच्चे के माता पिता का स्वर्गवास हो जाये तो उनके लिए होस्टल की भी व्यवस्था है जहाँ उनकी देखभाल की जायेगी। उन्होंने बताया कि हमें जो भी अनुदान मिलेगा उसे उन बच्चों के लिए इस्तेमाल करेंगे।

इस संस्था (घर) को बनाने में "बारासात विजन चैरिटेबल ट्रस्ट" मदद कर रही है। दिशा का उद्देश्य है एकीकृत परिवार विशेष बच्चों के लिए आधारित आवासीय देखभाल और पुनर्वास गाँव बनायें।

उन्होंने बताया कि इन सभी बच्चों के माता पिता रेसिडेंटल होम बनाया जायेगा जिसमें सभी के लिए कॉमन रसोइघर और डायनिंग हॉल होगा जिसमें सभी लोग एक साथ रहेंगे और जिससे बड़े परिवार का साथ सभी को मिलेगा।

80G की भी सुविधा है यहाँ, यह संस्था National Act (yr2011) और 80G of Income Tax Act, 1961 के अन्दर रेजिस्टर्ड (Registered) है।

मुझे डॉ० मंडल से मिलकर अच्छा लगा कि एक नयी सोच के साथ वे अपने सपने को साकार करने के लिए बहुत उत्सुक हैं।

किसी प्रकार की मदद करने के लिए आप डॉ० रणजीत मंडल को सम्पर्क कर सकते हैं–

Dr. Ranjit Mandal (Secretary)
Mobile : 9830022613
E-mail : bvctdisha@gmail.com
website: bvct-disha.org
BARASAT VISION CHARITABLE TRUST
Bijaylakshmi colony, P.o. Nabapally
Barasat, Dist: North 24 Parganas- 700126

फोन करें

182 अगर ट्रेन में खतरा लगे

सदीनामा द्वारा जनहित में जारी

रिपोर्टताज

टी.टी.एफ. सम्मेलन जुलाई 17

भारतीयों में पर्यटन के प्रति रुचि तेजी से बढ़ी है। सदीनामा के पुरी विशेषांक से हमें यह अनुभव हुआ। कोलकाता के नेताजी इण्डोर स्टेडियम में टी.टी.एफ. ने टूरिज्म मेला आयोजित किया जो 7,8 और 9 जुलाई को था। जिसमें देश के हर हिस्से के होटल वाले, टूर एण्ड ट्रेवल्स, रिसोर्ट वाले एवं भारत सरकार के साथ में राज्यों के टूरिज्म विभाग थे। इसके साथ ही चाइना, बांग्लादेश, थाईलैण्ड, भूटान, नेपाल, श्रीलंका के टूरिज्म के स्टॉल थे। मैंने, यानि मिनाक्षी सांगनेरिया तीन दि वहाँ का दौरा किया। कई लोग जिनके पास कुछ नहीं है पर टिकट खरीद कर इस मेले को देखने आये यह जानने के लिए कि इस मेले में क्या होता है। मैं वहाँ थी तब तीन प्रेस कान्फ्रेंस हुईं। जिसमें एक श्रीलंका, बांग्लादेश एवं अलीपुर द्वार इन लोगों ने अपने अपने टूरिज्म स्पॉट को समझाने की कोशिश की, वहाँ क्या होता है ? वहाँ क्या-क्या देखने लायक है ? और आप आओ तो आपके रहने की सुविधा कैसे हो सकती है ? यह मेला नौ वर्षों से लगाया जा रहा है। यहाँ पर मैंने प्राय: सभी स्टॉल पर बातें की कश्मीर के पीरजाद जाहूर से मिली जिन्होंने मुझसे बहुत अच्छे से बात की और बोले कितने लोग काश्मीर जाने से डरते हैं वैसा कुछ भी नहीं है। यूँ तो हर राज्य में कुछ न कुछ होता रहता है। हम अपने टूरिस्टों की हर तरह से सुरक्षा करते हैं। जिससे उनकी जान माल को नुकसान न हो। उन्होंने यह भी कहा इतना आसान नहीं है हमारे टूरिस्ट को कोई भी टेररिस्ट हानि पहुँचा सके। वह बोले यह संदेश मैं आपलोगों के द्वारा हर व्यक्ति तक पहुँचाना चाहता हूँ। उत्तराखंड एवं कुमाँयू मंडल का एक ही परिसर में दो खण्डों में बहुत ही सुन्दर स्टॉल था जिसमें अन्दर जाते ही गौरी ट्रेवल्स, गाल्जू टूर एण्ड ट्रेवल्स, होटल तीर्थ, हरिद्वार, शिवा कॉन्टिनेन्टल्स, सिलवर हिल्स होटल एण्ड रिसार्ट, प्रतीक्षा होटल, नेचुरोविला वैदिक रेस्टोरेंट, एक्सप्रियंस इंडिया होटल एण्ड रेसोर्ट प्राइवेट लिमिटेड, टाइगर कैम्प कार्बेट नेशनल पार्क, होटल सैफरोन लीफ, देहरादून, कार्बेट मैंगो ब्लम, सुनीता होटल एण्ड रेसोर्ट, होटल हिल पैलेस, कोसानी होटल, कौसानी रेसोर्ट, कैम्प निर्वाण, गुप्तकाशी, बाणकोट, किशोर ट्रेवल्स, वैदिक विलेज व स्पा रिसोर्ट, विल्ला टूर एण्ड ट्रेवल्स, डिवाइन एस्केप, विनायक टूर एण्ड ट्रेवल्स, विवादा क्रूसेस, ह्वाइट फेदर्स होसपीलिटी प्राइवेट लिमिटेड, विंड ओज, चेवरोन होटल, नैनीताल, दर्शन ट्रेवेल्स हरिद्वार, होटल पिन हेवन, उत्तराखण्ड वेकेसन प्राइवेट लिमिटेड, महेन्द्रा डेस्टीनेशन प्राइवेट लिमिटेड, देहरादून, ऋषि ट्रेवेल्स, हरिद्वार, होटल मानसरोवर इन्टरनैशनल, हरिद्वार, होटल सन एन स्टार मंसूरी, केसार जंगल रेसोर्ट, कूमोन ट्रीप, होटल दीप मंसूरी, पर्ल हास्पिटलिटी, सुमन होटल एण्ड रिसोर्ट इतने होटल का वहाँ पर स्टाल था। यहाँ मैं उत्तराखण्ड के कोलकाता चीफ एस.पी. ज्वेल से मिली और कुमायूँ मंडल के गवर्नमेंट ऑफ आन्ध्र प्रदेश, बांग्लादेश टूरिज्म बोर्ड, आसाम, टूरिज्म डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड, अण्डमान और निकोबार एडमिनिस्ट्रेशन, अलीपुरद्वार डिस्ट्रिक टूरिज्म एण्ड नैचूरल हिल टॉप रेसोर्ट, एयर इंडिया, एबी हास्पिटालिटी, एक्यूरा स्केन, अण्डमान स्वागत, अण्डमान टूर, अर्बी टूरिज्म, और द माइस्टीक होटल, एस्यूम इन्फोटेक प्राइवेट लिमिटेड, मित्राकार्निक नैशनल पार्क, भूटान, इशकोल टूर एण्ड ट्रेक, बोडोलेण्ड टेरीटोरियल काउंसिल, बोन वोयगर्स, कार्लसोन होटल, छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड, चाइना नैशनल टूरिज्म आफिस, काफी डे होटल एण्ड रेसोर्ट, कर्न्जवेसन, कार्पोरेशन ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (इनफिनिटी रेसोर्ट), कॉउर्टीवेकेसन, देवराज होटल प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली टूरिज्म एण्ड ट्रांसपोर्टसन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, डेजोंग लेजियर प्राइवेट लिमिटेड, डिस्कवरी ट्रैवल्स एण्ड टूरिज्म, एल.एल.सी, एकान्ता अपान ट्रेवल्स, एलीसियन गार्डन हिल्ल रेसोर्ट, एस्ट्राला दो मार बीच रेसोर्ट, फायरवेकेजी ग्रुप ऑफ होटेल (फायरमाउंट होटेल प्राइवेट लिमिटेड, फनजटूर, घोष टूर एण्ड ट्रेवेल्स, गवर्नमेंट कर्नाटका, होटल रूपा, मैसूर ट्रैलजी, बेलंगलोर, एसके एलीगेन्स, मैसूर, रियो मेरिडियन मैसूर। गवर्नमेण्ट केरेला, गवर्नमेंट मेघालय, गवर्नमेंट राजस्थान में मेरी मुलाकात वहाँ के चीफ से हुई। जितेन्द्र कुमार सिंह से बात हुई उनसे मैंने वहाँ के बारे में जानकारी मांगी तो वे अपनी ऑफिस आ कर बात करने को कहे। इस प्रकार वहाँ से निकल कर हिमाचल प्रदेश सरकार में गयी वहाँ भी साज-सज्जा सुन्दर व्यवस्थित स्टॉल थे। उनमें जिन लोगों ने भाग लिया

वे होटल जंगल लिव-इन-चैल। होटल भूशार ट्राइट्स सरहान, शिवालिक ग्रुप ऑफ होटेल, कोटेज एण्ड रेसोर्ट मनाली, आमोद रिसोर्ट (शिमला) होटल पंकज, शिमला, रुचिका टूर एन ट्रेवेल्स किंग पैलेस होटेल, एचवी. शिमला, होटेल रिंग व्यू-शिमला, होटल संगम-भूंतार कूल्लू एण्ड सार्थक रिसोर्ट-मनाली, आचमन रेजेंसी- शिमला, होटेल अम्बा सोलांग वैली रेसोर्ट, शिमला हैवेन एण्ड रिसोर्ट, होटल डलहौजी ग्राण्ड-डलहौजी। शिंगिग स्टार रेसोर्ट-खाजियर, होटल किंग, होटल कलिंगा ग्राण्ड, होटल कलिंगा इन्टरकोन्टिनेंटल, द ओर्गीन होटल, इण्डियन ट्रेवल, द मोनिकर रिसोर्ट एण्ड स्पा, होटल सूर्या इन्टरनैशनल। ए स्टार रेजेंसी, होटल ट्रियूड योगिन्दर टूर एण्ड ट्रेवेल्स इत्यादि। गोवा सरकार का स्टॉल बहुत सुन्दर था यहाँ के टूरिज्म मिनिस्टर श्री मनोहर अलगोनाकर भी लास्ट दिन आये उन्होंने गोवा के बारे में जो बताया और अपनी गोवा की टीम को बधाई दी और उनका और जितने टूर ट्रेवेल्स वाले आये उनका उत्साह बढ़ाते हुए बधाई दी और अन्तिम सिरोमनी में सबको पदक भी प्रदान किये। साथ में वेस्ट बंगाल का स्टाल तो बहुत ही खूबसूरत उसमें सुन्दरवन के मनोरम दृश्य भी दर्शाये गये थे। साथ में टूर एवं ट्रेवेल्स वाले भी जिनके नाम हिमालय टूरिज्म, सिलीगुड़ी कार सर्विस, ड्रीमवे डेस्टिनेसन, शाह टूर ईस्टर्न मेडोवस टूर, दिशा टूर, चेस होटल, डायमण्ड टूर एण्ड ट्रेवल्स, ग्राण्ड सेरीना होटल्स एण्ड रेसोर्ट, हिन्दुस्तान होटल हाइवा हेवन, होटल महाजन पैलेस, होटल माली इण्टरनेशनल, होटल राज पार्क, होटल सीता इण्टरनेशनल, होटल पाइन स्प्रिंग, होटल वेलकम पैलेस, स्टार ग्रुप ऑफ होटल, होटल जी, ट्रेवेल्स जोन, इंडिया टूरिज्म डेवलेपमेंट कॉरपरेशन लिमिटेड (आईटीडीसी) इंडियावुल्लस इन्वेस्टमेंट एडवाइसर लिमिटेड, इंडियन रेलवे केटरिंग एण्ड टूरिज्म कारपोरेशन लिमिटेड, आई आर आईएस होटल एण्ड रेसोर्ट (फलता), इसोलाडी कोको आयुर्वेदिक बीच रेसोर्ट, इटजकास, मुम्बई, जर्नी आफ लद्दाख, कल्याणी टूर एण्ड ट्रेवल्स, कोलाही ग्रीन होटल एण्ड रेसोर्ट, लाटागुरी रेसोर्ट ऑनर वेलफेयर एसोसियेसन, ली मारीटाइम कोची, केरेला, लेजियर होटल लिमिडेट, लोनिया होलिस्टिक डेस्टिनेसन, माको गोवर्नमेंट टूरिस्ट ऑफिस मध्यप्रदेश स्टेट टूरिज्म डेवलोपमेंट कार्पोरेसन यहाँ बौद्ध के स्टेचू और उनके संस्करण के हिसाब से हाल बनाया गया था। बहुत ही सुन्दर और अलग लग रहा था। इनकी ऑफिस बीच में चारों तरफ होटल वाले बैठे थे। महाराष्ट्र टूरिज्म डेवलोपमेंट कार्पोरेसन, इसकी सज्जा भी सुन्दर थी। मेरीन रिसोर्ट प्राइवेट लिमिटेड माइकल टूरिज्म एण्ड ट्रेवेल्स एल एल सी, म्यनमार एयरवेज इण्टरनेशनल, नेपाल होलिडे मेकेरस टूर एण्ड ट्रेवेल्स प्राइवेट लिमिटेड, नेपाल टूरिज्म बोर्ड, बुद्धा एयर रेड कार्पेट टूर एण्ड ट्रेवेल्स पाइवेट लिमिटेड, अपरूपा टूर एण्ड ट्रेवेल्स लिमिटेड, आउटडोर हिमालयन ट्रेक, सरावगी नेपाल ट्रेवेल्स प्राइवेट लिमिटेड, सत्यम टूर एण्ड ट्रेवेल्स प्राइवेट लिमिटेड, ओडिसा होली डे प्राइवेट लिमिटेड, आरचिड ग्लोबल, रामदा जमशेदपुर, विस्टुपुर, रामदा दार्जिलिंग गांधी रोड इत्यादि।

इस तरह मैं प्राय: हर स्टाल में गयी वहाँ मैने देखा हर स्टाल में सब तत्पर रहते थे। पहले से ही आये हुए लोगों का स्वागत करने के लिए वहाँ पर हर तरह से प्रबन्ध किया हुआ था। फूड का स्टाल भी था जहाँ आपके लिए भोजन नाश्ता या पानी कॉफी, चाय की व्यवस्था भी सुचारू रूप से थी। अन्तिम दिन वहाँ पर टी टी एफ के द्वारा प्रेस क्रान्फ्रेंस किया गया जहाँ जिनके स्टाल सुन्दर थे या बेहतरीन तरीके से सजाये थे। उन्हें ट्राफी प्रदान की गई गोवा के टूरिज्म मिनिस्टर के हाथों के द्वारा समापन समारोह में टीटीएफ और ओटीएम की एक डाकूमेन्टरी भी दिखायी गई।

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

- WEL COME TO MY SHOP
- YOUR VISION IS OUR MISSION
- EVERY COUSTMER IS VALUBLE IN MY SHOP
- YOUR RESPECT IS MY FIRST MOTVE
- ANY TYPE OF SERVICE EYE RELETED IN MY SHOP AND CHAMBER

सामयिक

खाड़ी देशों की ओर.....

–यदुनाथ सेउटा

आज खाड़ी देशों में जाने वाले प्रवासी भारतीयों की संख्या बहुत बड़ी है। यह संख्या प्रत्येक वर्ष बढ़ती जा रही है। प्रवासी श्रमिक भारतीयों द्वारा देश में भेजा जाने वाला धन भी करोड़ों नहीं अरबों डालर में होगा ? जिसकी प्राय: चर्चा मीडिया और जनमानस में होती रहती है। जननी और जन्मभूमि की गोद आकाश से भी लम्बी-चौड़ी होती है। गरीब श्रमिक अपनी भूमि को छोड़कर दूसरे देशों में क्यों जाते हैं ? घर परिवार से दूर जहाँ केवल यादें और आँसू होते हैं। इसका कारण स्पष्ट है–मनुष्यों की अपनी मजबूरी तथा दूसरों द्वारा लादी गयी विवशता है, अत्यन्त गरीबी है, रोटी का प्रश्न है! देश महान होता है। माता-पिता की भूमि महान है। रोटी देने वाला श्रम और देश भी महान होते हैं। प्रकृति सत्य और शाश्वत है। समय बलवान है। किसी ने समय को खांचे में बाँध कर नहीं रखा है। समय पल-पल आगे बढ़ रहा है। आर्य रोटी और चारागाह की खोज में नागलोक, जम्बूदीप चले आये। आज इस भूमि के भूस्वामी बने हुए हैं तथा शासन, प्रशासन को मुट्ठी में दबोचे हुए है। मूल निवासी आज भी छल और ढकोसलों से भयभीत हैं। मूल निवासी निर्धन, गरीब शोषित और आहत दर-दर की ठोकरें खाने को बाध्य हैं। हमारा श्रम, हमारी धरती, हम ही रोटी को तरसते रहे हैं। हाँ, सहिष्णुता के नाम पर अपना जुठन और जानवरों (मृत) की माँस अवश्य खिलाए।

देश गुलाम होता रहा, इसी क्रम में अंग्रेजों ने इण्डियन मजदूरों को सात समुद्र पार खेतो, खदानों, सड़कों, भवनों और उद्योगों में काम करने हेतु बलपूर्वक विदेशों में भेजा। कुछ ठेकेदारी अनुबन्ध के आधार पर फिजी, मारीशस, सूरीनाम, नटाल और वेस्टइण्डिज ले गये। वहाँ श्रमिकों ने श्रमबल पर स्वयं को हर क्षेत्र में खड़ा किया। रोटी श्रम से मिलती है, किन्तु अपने देश में श्रमिक ही भूखा है। श्रमिकों ने आजीविका के लिए प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल दिया। आज श्रमिक शासक हैं, तो केवल श्रम बल, तपबल और विवेक बल पर ही सफल है। प्रवासी भारतीय स्वजनों से दूर रहने को विवश हुआ। श्रमिक गुलामों के गुलाम थे। सर्वहारा, तन पर कोड़े की मार, मन पर अपमान का थपेड़ा, आँखों में अपार आँसू लिए भूखे प्यासे विदेशी धरती पर उतरे थे। सामने गहन अंधकार मन में पीड़ा दुखों का कहीं अंत नहीं था। चारों तरफ हिलोरे लेता महासागर उमड़ रहा था। मानो सागर जल आँसुओं से सृजित हुआ था। पल-पल पितृभूमि की याद रुला रही थी। परिस्थितियाँ बदली, देश-देश के अपने नियम कानून बने।

आज भारतीय श्रमिक खाड़ी देखों की ओर उन्मुख हैं। जीवन जीने के लिए मूलभूत सुविधाओं, रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा सुरक्षा और सम्मान हेतु देश की माटी को छोड़ विदेशों में कदम बढ़ा चुके हैं। उत्तर प्रदेश तथा बिहार से अधिक संख्या में विविध दक्ष शिल्पकार श्रमिक खाड़ी देशों में जा रहे हैं। केरल और आंध्रप्रदेश को जनबल में पीछे छोड़ दिए हैं। क्यों अधिक संख्या में जा रहे हैं ? इस पर विचार करना नितान्त आवश्यक है। श्रम हेतु विदेशगमन बड़ा ही कष्टकर होता है। इसके मुख्य कारण है- भूमिहीन होना, जातिवादिता का जटिल घेरा, गरीबी, भूखमरी अशिक्षा, पूंजीवाद का विस्तार, गुलामी जनसंख्या वृद्धि और बढ़ती बेकारी है।

अंग्रेजों ने भूमि स्थाई बन्दोबस्ती व्यवस्था को अपने लाभ के लिए अनैतिक ढंग से बाहुबलियों, सामन्तों और जमींदारों को सौंप दिया। जमींदार बलपूर्वक लगान लेनें लगे। जो लगान नहीं दे पाते, उनकी जमीन छीन ली जाती थी। गरीब और गरीब होता गया। जमीन कुछ लोगों के हाथों में कैद हो गयी। आज तक उन्हीं के हाथों में कैद है। अंग्रेजों द्वारा लादी गई भूमि स्थाई बन्दोबस्ती आज भी लागू है। किसी में साहस नहीं है कि लोकसभा, विधानसभा सदस्यों के कंधे पर हाथ रख दे। विवेक लकवाग्रस्त है। जन प्रतिनिधि का अर्थ बदल गया है। श्रमिक भूमि के अभाव में दर-दर की ठोंकरे खा रहा है। गरीबों और शोषितों के पास खड़े होने भर की जमीन नहीं है। एक खाँची माटी के लिए भूस्वामियों के सामने गिड़गिड़ाना पड़ रहा है। निवास के लिए अंध कमरे, अंधी गलियाँ और सिलन भरी माटी पर गुजर बसर करता है। सरकारें आती हैं, जाती हैं। आज तक भूमि सुधार कानून पारित नहीं कर सकी हैं। कुछ कानून हैं तो उसे वास्तविक धरातल पर नहीं लाया जा सका है। श्रमशील हाथों को भूमि प्रदान किया गया। ग्राम समाज की अधिकृत जमीनों का सही ढंग से बंटवारा नहीं हुआ। भू-स्वामी के भय से कोई जोत भी नहीं पाया। जोत भू सीमा का निर्धारण केवल कागजों पर अंकित है। सारी जमीन सवर्णों के

पास संचित है। समता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व और न्याय केवल कहने की वस्तु बने हैं। नौकरी करते हैं, व्यवसाय करते हैं तो टैक्स देना पड़ता है। भूमि पर एवं उत्पादित अन्न, फल, फूल पर कोई टैक्स नहीं है ? क्यों नहीं है ? सरकार चुप है। गरीब जनता मुँह देख रही है। आज तक जमीन्दारों, भूपतियों के ऊपर हाथ रखने का साहस किसी ने नहीं किया। सत्ता में बैठे हुए लोगों के पास ही तो सारा धन संचित है। भूमिहीन, गरीब, शोषित, लाचार, तंगी का जीवन जीने को विवश है। सवर्ण, गरीबों की बेबसी का का लाभ उठाना चाहता है। अंग्रेजों के जमाने का जमींदार बनना चाहता है ताकि शोषितों को गुलाम बना सके। गरीबों में "बाबा साहब" की चेतना भर गयी है। वह मर सकता है किन्तु बेगारी नहीं करेगा। दूसरे देशों में जाकर नौकरी करेगा किन्तु गुलामी नहीं करने की ठान लिया है। भूमि सुधार द्वारा समाज में समता लाना था किन्तु सत्ता में बैठे हुए जनप्रतिनिधि मौन साधे हैं। अंग्रेजों द्वारा थोपी गयी व्यवस्था, शिक्षा न्याय पूंजीपतियों के हाथों में नृत्य कर रही है। भूमि स्थायी बन्दोबस्ती क्षेत्र के भीतर और बाहर उच्च मध्यवर्गीय जमींदारों, भू बाहुबलियों का अस्तित्व सुरक्षित है। अंग्रेजों ने जमींदारों को राजस्व संग्रह का अधिकार दिया साथ ही साथ जातिगत अधिकार एवं सुविधाएँ दी। अगर सच्चे मन से गरीबों, वंचितों और भूमिहीनों की सहायता करनी है तो भू स्वामियों की आर्थिक शक्ति पर अंकुश लगाना होगा। पूंजीवाद गरीबों की लाश पर आगे बढ़ता है। भूमि विवाद को लेकर ही गाँवों में तनातनी, हिंसा और अपराध बढ़ते जा रहे हैं। न्यायालयों के पास भूमि विवादों की झड़ी लगी है। सामाजिक विषमता बढ़ रही है, जैसे प्रदूषण बढ़ रहा है। भूस्वामी मनमाने ढंग से जमीन क्रय-विक्रय करते हैं। जमीन और पूंजी पर एकाधिकार जमाए लोग देश को देश, विकसित राष्ट्र देखना नहीं चाहते। अपना भला-भला जग माहि। जनता में असंतोष पनप रहा है, भूखे कब तक मौन रहेंगे ? कृषि को उद्योग घोषित करके श्रमिकों को नौकरी दिया जाय। हदबंदी कानून बनाया जाए। तभी प्रतिभाएं विदेशों की तरफ आँख उठा कर कम देखेगी।

श्रमिक शिल्पकार खाड़ी देशों की ओर पलायन कम करेंगे। कोई ऐसा नायक नहीं दिखता जो सच्चे मन से सर्वहित की बात करे।

दूसरा प्रमुख कारण जातिवादिता है:– धार्मिक नेताओं ने आदमी को आदमी नहीं रहने दिया; निरंकुश हजारों जातियों में बाँटता चला गया। इसमें उसका हित था। स्वयं को श्रेष्ठ कहलाने के लिए यही सरल रास्ता मिला था। शुद्ध शुद्रों को जमीन और धन संग्रह का अधिकार नहीं था। अगर धन है तो ब्राह्मण धन को छीन ले, वाह! रे तेरा नियम। आज भी सम्पूर्ण ताना-बाना भूस्वामियों, धनिकों और पूंजीपतियों की सुरक्षा हेतु बुना जा रहा है। झूठे गरीबों के नाम की माला फेरी जा रही है। निजी कम्पनियाँ स्वजनों को मुँह देखा काम और दाम दे रही है। कुछ प्रमुख उद्योगपतियों ने स्पष्ट कहा था कि, दलितों, वंचितों को नौकरी देना उचित नहीं है। जिसने धरती को समतल उर्वरायुक्त बनाया, महल, सड़क, उद्योगों को श्रमबल से संवारा, आज वही जाति के नाम पर अवहेलित हैं। देश की राजधानी महानगरी दिल्ली में दलित के नाम पर रहने के लिए कमरा मिलना संभव नहीं है तो हाथ कतो काम कैसे मिल सकता है ? जातिवादिता के कारण ही देश हजारों वर्ष तक गुलाम रहा। दलित श्रमिक गुलामों का गुलाम है। दलित जातिपांति के रोग से तिलमिला रहा और शंख बजाने वाले झूम-झूम शंख बजा रहे हैं। सम्पूर्ण उद्योगों पर सवर्ण पूंजीपतियों का एकछत्र राज एवं अधिकार है। आज पूंजीवाद को बढ़ावा तथा हर विभाग को ठेका के पास, हँस-हँस कर दिया जा रहा है। बाहुबली ठेका लेते हैं और राजनेता सबका विकास कर रहे हैं। ठेकेदार कम वेतन देता है काम के घंटे अधिक लेता है। वह जानता है कि श्रमशील अधिक हैं। वह मजदूरी नहीं देता है। श्रमिकों को झांसे में रख सारा पैसा लेकर चम्पत हो जाता है। श्रमशील भीख मांगने को मजबूर होता है। जाति के नाम पर व्यक्ति जन्म जाति की जंजीरों से कसा, बंधा कराह रहा है। जातिपांति, छुआछूत, अंधविश्वास ढकोसले और कर्मकाण्ड ज्यों के त्यों विहँस रहे हैं। मनुष्य हीनता बोध के कारण दूसरे देशों में श्रम करने को विवश होता है। इधर कुछ वर्षों से जातीय संघर्ष तेजी से बढ़े हैं। श्रमिकों का रक्त सबसे सस्ता है। परिणामस्वरूप श्रमिक रोटी-रोजी के लिए खाड़ी देशों की ओर जा रहा है। इसके लिए मजदूर अपना सब कुछ दाव पर लगा देता है। पूजा करते करते तो वीजा मिला। बाईबिल कहती है– "अपनी रोटी तू अपना पसीना बहाकर कमा और खा।" मनुष्य रोटी के लिए श्रम संघर्ष कर रहा किन्तु पूंजीपति आमोद-प्रमोद के साधनों से घिरा नींद में है। जब मनुष्य सामाजिक आदर्शों, नैतिक मूल्यों एवं न्याय के विरुद्ध आचरण मनमाने ढंग से करता है तभी समाज में दुष्कर्म, अपराध, नशाखोरी, और हिंसा उग्र रूप में सामने आते हैं।सभी लोग श्रम की रोटी खाने लगें तो वर्ग संघर्ष, तनाव एवं द्वेष सदा के लिए मिट जाएंगे। भारत को

धर्म नाम का विषैला बिच्छू डंक मारता है। राजनेता जनता को दिशाहीन करते हैं। "कौशल विकास" के नाम पर प्रशिक्षण दिया गया परन्तु उसका परीक्षाफल सालों बाद भी नहीं निकला। छात्र ठगे गये या देश ठगा गया। थका, हारा श्रमिक खाड़ी देशों की तरफ रूख किया है। बेकारी जो न कराए।

भारत की जनसंख्या का छठवाँ भाग प्रतिदिन खाद्य के अभाव में अधपेट या भूखे पेट रहता है। श्रम करने वाले हाथ बेकार हैं। महीने में चार-छ: दिन काम भी मिल गया तो घर संसार चलाना कठिन होता है। ऐसे में सरकारी चावल-गेहूँ खरीदने की शक्ति कमजोर हो जाती है। समस्याएं नोचती-कोचती हैं। सरकारी विद्यालयों में छात्रों की संख्या नगण्य है, वहीं निजी विद्यालयों में छात्रों की भरमार है। निजी विद्यालयों की फीस, ड्रेस इत्यादि में अधिक खर्च है फिर भी देखा देखी हर खर्चे पर अंकुश लगा, शिक्षा दिलाने का प्रयत्न हो रहा है। कक्षा पाँच पास कराते-कराते करधन ढीली हो जाती है। गरीब का बच्चा शिक्षित हुआ कि मात्र साक्षर ? गोदामों में गेहूँ चावल सड़े, गाय गोरू जंगली बंदर चूहे और गिलहरी खाए तो खाएं किन्तु आदमी खाने न पाये। मनरेगा ग्रामप्रधानों के हाथ का खिलौना है, जैसे चाहे वैसे खेले। पैसा फेकों तमाशा देखो। गरीब मरता है मरने दो, किसी के सेहत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। लच्छेदार भाषणों से पेट नहीं भरेगा। वैज्ञानिक युग में परम्परागत व्यवसाय रोटी नहीं देता, सम्मान मिलता नहीं है। समान अवसर की मूल भावना समानता के सिद्धान्त में निहित है। इसी के माध्यम से उत्तम फल मिल सकता है। श्रम करते हुए भूख में ही जीए और भूख में ही मर गये। 'कर्म करो फल की इच्छा मत करो'। यह वचन अक्षर सह गलत और अमर्यादित है। श्रमिकों ने इसे नकार दिया। गरीब सोचता है कर्मकाण्ड पाखण्ड और अनैतिकता में ही रोती मिल सकती है। गरीबी आज तक गयी नहीं इसे मिटाने के लिए विषमता को मिटाना अति आवश्यकत है। अनीति और भ्रष्टाचार मिटानें का साहस अभी तक किसी में भी नहीं है।

हम मेहनत कसों को श्रम के बदले आज ही मजदूरी चाहिए। कल किसने देखा है। शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाकर उधार की शिक्षा से मुक्ति पा सकते हैं। प्रकृति परिवर्तनशील है तो हर सामाजिक व्यवस्था समय के साथ बदल जानी चाहिए।

दूसरे देशों में प्रशिक्षित जाएंगे तो हर प्रकार का सम्मान मिलेगा। देश का नाम उज्ज्वल होगा। अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी और कुपोषण देश के लिए कलंक है। यही सामाजिक और नैतिक अभिशाप हैं। किसी दैवी शक्ति ने कभी दु:ख दूर नहीं किया। सब कुछ दिखावे के हैं। श्रम ही भगवान है।

विदेशों में जाने वाले प्रवासी इंडियन अधिक संख्या में है। इससे हजारों परिवारों का भरण-पोषण शिक्षा और स्वास्थ्य लाभ मिल रहा है। कुशल श्रमिक सक्षम होते हैं किन्तु अकुशल श्रमिक जिसको शिल्प में दक्षता प्राप्त नहीं है, उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं से अनेक परिवार प्रभावित होतेहैं। रोजगारमूलक शिक्षा होने से सर्वजन को लाभ होगा। अधिक जनसंख्या के दबाव में खेती योग्य भूमि कम होती जा रही है। इसलिए गरीब शोषित दलित और अल्पसंख्यक खाड़ी देशों की ओर दौड़ लगा रहे हैं। पुरबिया प्रवासी के नाम से विख्यात श्रमिक पूर्वी उत्तर-प्रदेश एवं बिहार से अधिसंख्यक हर दिन भेजे जा रहे हैं। जहाँ हम भाषा बोली से एकदम अनभिज्ञ होते हैं, वहाँ भी संकेतों के माध्यम से हर कार्य दक्षतापूर्ण कर लेते हैं। वहाँ श्रम और श्रमिकों को महत्व है। इण्डिया में ज्यादा योगी मठ उजाड़ वाली कहावत चरितार्थ है। कभी घर गाँव की महिलाएं, युवतियाँ प्रियतम को विदेश कमाने के लिए मना करती थी कि पूर्व देशों में मत जाओ। मैं खेतों खलिहानों में काम करके दिन काट लूंगी। मुझे झुमका बालियाँ और नथुनी नहीं चाहिए। तुम ही मेरे गले की हँसुली हो। समय बदला और आज खुशी-खुशी पश्चिम देशों में जाने की मौन स्वीकृति तो दे ही देती हैं। व्यक्ति आजीविका के लिए हृदय पर मनो बोझ लादे जाने को विवश है। खाड़ी देशों की ओर रोटी-रोजी हेतु मजदूर, दलित और शोषित जाते रहेंगे। यही समय की मांग है। गरीब सोया है, संसार के इतिहास से अनभिज्ञ हैं। समाज के हाँसिये पर जीने वाले कब तक सत्ता की दया पर रहेंगे। प्रवासी मेहनतकश भारतीयों की आँखों से भावनाओं को पढ़, समझ नीतियों का निर्धारण करना चाहिए। विविध शिल्पों के प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाने चाहिए ताकि प्रशिक्षण लेकर सम्मान का जीवन जी सकें। आज यथार्थवादी नीतियों की बड़ी आवश्यकता है। भवतु सब्ब मंगलम्।

यदुनाथ सेउटा
ग्राम-पोस्ट : सेउटा
जिला : आजमगढ़
उत्तर प्रदेश

विज्ञापन

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ :

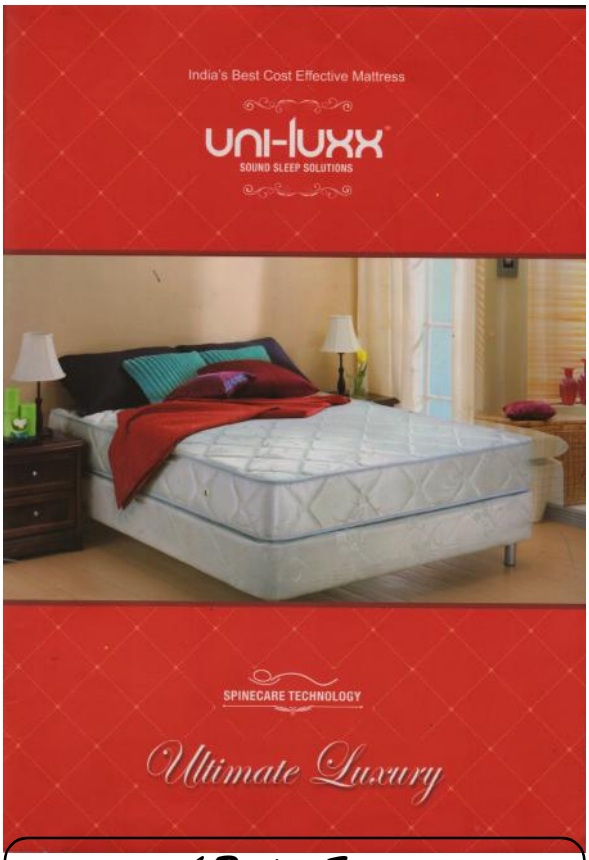

A Product From :

JK FOAM

(AN ISO 9001-2008 COMPANY)
WEST BENGAL& KARNATAKA
Websit :www.uniluxx.com * www.jkfoam.com
mail : info@uniluxx.com * jkfoam.slg@gmail.com
Customer Care: +9199321 3888 * 91 99322 75000

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

सौरभ झुनझुनवाला

FLORA FOAM FABRICS PVT.LTD.

Dealers of :

P.U. Foam, Rubber Foam, Coir Foam, Mattress,
Plastic Furniture, Pillows Furnishing Cloth, Etc.
167/4, Lenin Sarani, Kolkata-700 072
Phone : 6555-3360,2215-8336,2215-8337

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

कमलेश कुमार ढाढ़नियाँ

(M) : 8335880580

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

सुजीत शर्मा

नील कमल फैशन

45/5, जी॰टी॰ रोड-711101
(M) : 99036558696

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

अवधेश साव

अध्यक्ष : भाजपा उत्तर हावड़ा
मण्डल -2
मो॰ : 9903238073

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

शिव कुमार साव

महासचिव : भाजपा मध्य हावड़ा
मण्डल -3
मो॰ : 7439260939

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

बद्रीनारायण सिंह

अध्यक्ष : भाजपा मध्य हावड़ा
मण्डल -3
29/3 New Seal Lane, How-1
मो॰ : 9903056170

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

दीना बेन सेठ

विश्व हिन्दू परिषद
महानगर प्रमुख : मातृ शक्ति
मो॰ : 9477276004

परिचर्चा

उपभोक्ता को 'किंग' बनाने की कवायद

–आलोक कुमार

गुड्स एंड सर्विस टैक्सेज (जीएसटी) यानी "एक भारत-एक कर"। इसको दूसरी आर्थिक क्रान्ति कहा जा रहा है। जीएसटी की व्यवस्था को स्थिर करने का काम जारी है। इसके जरिए हम नवविकासवाद की ऊँचाईयों का स्पर्श करने जा रहे हैं। कर वसूली की सुदृढ़ व्यवस्था करने का एक मकसद उपभोक्ता को "किंग" बनाना भी है। इस दिशा में चरणबद्ध तरीके से काम हो रहा है। उपभोक्ता खुद को तब ही किंग यानी सहुलियत वाली अवस्था में महसूस करेगा जब सरकार उचित, सटीक और मानक मापतौल वाला सामान मिलने की व्यवस्था सुनिश्चित करेगी। केन्द्र सरकार का यह प्रयास पहली जनवरी 2018 तक पूरी तरह से लागू हो जाएगा। इसमें ठोस प्रावधान होंगे कि मिलावटखोर की खैर न मन पाए। ई-कॉमर्स के जरिए समान की डिलेवरी को लेकर धोखाधड़ी बंद हो जाए। एक उत्पाद का हर जगह एक ही एमआरपी यानी मैक्सिमम रिटेल प्राइस हो। विज्ञापनों के जरिए उपभोक्ता को बेवकूफ बनाने वाले सहम जाएं। केन्द्रीय उपभोक्ता, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री रामविलास पासवान ने लोकसभा में इस आशय की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि सरकार भ्रामक विज्ञापनों पर कड़ी सजा का प्रावधान वाला एक नया उपभोक्ता संरक्षण कानून लाएगी। इसके लिए संसद की स्थायी समिति ने उपभोक्ता संरक्षण विधेयक 2015 के विभिन्न संशोधनों का सुझाव दिया गया है। सरकार उन्हें नए विधेयक में शामिल करेगी।

किसी अर्थव्यवस्था के प्रभावी संचालन के लिए उपभोक्ता के संरक्षण का दायित्व सरकार पर है। विकसित यूरोपीय जगत अमेरिका में उपभोक्ताओं के संरक्षण की कई किवदंतियाँ अक्सर सुनने को मिलती है। तब हठात् अहसास होता है कि काश हमारे यहाँ भी उपभोक्ताओं के संरक्षण का विधान कठोर कानूनी पैबंद वाले होते। पूरा मामला सिर्फ "जागो ग्राहक जागो" के विज्ञापन तक सीमित होने के बजाय व्यवहारिक बन पाता। विकसित जगत के बाजार का असली मालिक उपभोक्ता ही है। अपने यहाँ भी ऐसी मजबूत व्यवस्था हर कोई चाहता है। इसके लिए हमारी व्यवस्था में बदलाव की दलील लंबे समय से दी जा रही थी। अब लगता है कि इस मामले में सरकार ने गंभीर प्रयास शुरू कर दिए हैं।

तीन साल पहले एनडीए की सरकार आने के बाद उपभोक्ता संरक्षण के लिए किए प्रयास के नतीजे अब धरातल पर दिखने लगे हैं। बड़ी संख्या में झूठे और भ्रामक विज्ञापन आने की बात पकड़ में आते ही सरकार सक्रिय है। भ्रामक विज्ञापनों से निपटने के लिए लंबे समय से सख्त नियम बनाने की बात तो होती रही है। पहली बार है कि छोटे-मोटों की बात कौन करे ? सदी के महानायक अमिताभ बच्चन और क्रिकेट के भगवान सचिन तेन्दुलकर तक को कमजोर उत्पाद का विज्ञापन करने से बुरे नतीजे झेलने पड़े हैं। कानूनी मेट्रोलॉजी (पैकेज वस्तुओं) नियम 2011 को प्रभावी करने का काम पर बल है। यह नया उपभोक्ता संरक्षण कानून की मजबूत पृष्ठभूमि तैयार करता है, जिसके तहत भ्रामक विज्ञापन देने वालों को सख्त सजा का प्रावधान होगा।

कम्पनी अपने उत्पाद की बिक्री बढ़ाने के लिए प्रचार करती है। लेकिन विज्ञापन और उत्पादन के गुणवत्ता का तारतम्य बैठाना अक्सर मुश्किल होता है। विज्ञापनों को गुमराह करने वाले पाये जाने की बात आम है। इसे उपभोक्ता के विश्वास के प्रति धोखे का मामला मानने की कानूनी व्यवस्था हो रही है। धोखेबाजों के लिए भारतीय दण्ड संहिता में जो प्रावधान है, उसमें उपभोक्ताओं को नुकसान पहुँचाने वाले विज्ञापनदाता और विज्ञापन करने वाले सेलिब्रेटी दोनों के खिलाफ कानून आयद किया जा रहा है। हमारे समाज में जागरूकता की व्यापक कमी के चलते ज्यादातर लोग वस्तुओं की उपयोगिता को विज्ञापनों में किए गये दावों के मुताबिक मान लेते हैं और उसकी हकीकत के बारे में पड़ताल नहीं करते। जबकि किसी भी उपभोक्ता को अधिकार होना चाहिए कि वह उत्पाद के विज्ञापन में दावा किये गये गुणवत्ता के जाँच की माँग करें। ऐसा नहीं पाये जाने पर उसके खिलाफ शिकायत का अधिकार रखे।

वस्तुओं के विज्ञापन में किये गये दावों की वास्तविकता की जाँच-परख की कसौटी नहीं थी और न इन पर कारगर तरीके से रोक लगाने के लिए कोई तंत्र था। अब सरकार ने इस तंत्र को

सक्रिय करने का फैसला लिया है। नये दिशा-निर्देश में किसी वस्तु के गुण-दोषों का ब्यौरा न देकर भ्रमित करने वाली जानकारियाँ देते अखबार, टीवी या एसएमएस के जरिए परोसे जाने वाले विज्ञापनों पर रोक लगाने का प्रावधान है। केन्द्रीय उपभोक्ता खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री रामविलास पासवान ने भ्रामक विज्ञापनों पर लगाम लगाने के लिए कड़ी सजा वाला कानून लाने की बात लोकसभा में कही है और इस तरह का कानून बनाकर मंत्रिमंडल के समक्ष रखने तक का दावा किया है। इससे उम्मीद बंधी है कि सरकार अपने वादे पर खरा उतरेगी और भ्रामक विज्ञापनों के जरिए आम उपभोक्ता को गुमराह करने वाली कार्यवाही पर अंकुश लग सकेगा।

उपभोक्ता संरक्षण कानून अधिनियम 1986 देश भर में लागू है। तब से इसके जरिए कानून लागू करने वाली एजेंसियों को उपभोक्ताओं के संरक्षण में खड़े होने का हक मिला हुआ है। इसमें उपभोक्ता के अधिकार तौर पर उल्लेखित है कि उपभोक्ता जीवन एवं सम्पत्ति के लिए घातक पदार्थों या सेवाओं की बिक्री से बचाव का अधिकार रखेगा। उपभोक्ता पदार्थों एवं सेवाओं का मूल्य, उनका स्तर, गुणवत्ता, शुद्धता, मात्रा व प्रभाव के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त करने का अधिकार है। जहाँ भी संभव हो प्रतिस्पर्धात्मक मूल्यों पर उपभोक्ता पदार्थों एवं सेवाओं की उपलब्धि के भरोसे का अधिकार है। अपने पक्ष की सुनवाई का अधिकार के साथ सभी उपयुक्त मंचों पर उपभोक्ता हितों को ध्यान में रखे जाने का आश्वासन मिला हुआ है। अनुचित व्यापार प्रक्रिया अथवा अनियंत्रित उपभोक्ता शोषण से संबंधित शिकायत की सुनवाई का अधिकार है। इसके लिए उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार है।

उपभोक्ता संरक्षण कानून ज्यादातर उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं पर लागू होता है। निजी, सरकारी और सहकारी सभी क्षेत्र के उत्पादों को इस कानून के अंतर्गत रखा गया है। जब किसी उपभोक्ता को लगे कि वस्तु या सेवा में कोई अनुचित या खराब है, जिसके कारण उसे हानि पहुँचती है। तब वह इस कानून का प्रयोग कर उचित उपभोक्ता फोरम में अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है। केन्द्रीय मंत्री पासवान कहते हैं कि इस व्यवस्था को जितना प्रचारित किया जाना चाहिए था वो नहीं हो सका। अगर ऐसा हुआ होता, तो भारतीय बाजार की धाक बेमिशाल होती।

सरकार का दायित्व है कि वह उपभोक्ता में भरोसा पैदा करे कि वह घटिया माल के खिलाफ उपभोक्ता अदालत की शरण में जाए। शिकायत कर पाये। कानूनी प्रावधान है कि उपभोक्ताओं की पंजीकृत स्वयंसेवी संस्थाएं शिकायत कर सकती हैं। केन्द्र सरकार शिकायत कर सकती है। राज्य सरकार शिकायत कर सकती है। समान हित वाले उपभोक्ता–समूह की ओर से एक अथवा अनेक उपभोक्ता शिकायत कर सकते हैं। नये नियम का प्रचार-प्रसार जारी है। नतीजे क्रमबद्ध तरीके से सामने आने लगे हैं। एयरपोर्ट, सिनेमा हाल, आम बाजार और मॉल्स में बेचे जाने वाले एक ही समान पर अलग-अलग एमआरपी का रैपर लगा होता था। अब तस्दीक की जा रही है कि एक समान का एक ही एमआरपी हो। उपभोक्ताओं के लिए सामानों का ई-कोडिंग अनिवार्य किया जा रहा है ताकि मात्रा के चेकिंग को साइंटिफिक हो। इसी तरह सामान के संमिश्रण को रैपर पर बड़े अक्षरों में साफ-साफ अंकित करने के नियम को कठोरता से लागू करने की बात हो रही है।

सबसे ज्यादा मुश्किल जीवन रक्षक मेडिकल व्यवस्था से जुड़े उत्पादों पर होता रहा है। ज्यादा कीमत वसुलने के लिए नुस्खे विकसित कर लिए गए थे। उन सबकी पहचान कर मंत्रालय ने नियम के जरिए उपभोक्ताओं की सहुलियत का ख्याल किया है। इसका असर बाजार पर दिखने लगा है। स्टंट, सिरींज, वाल्व आदि की कीमतें कम हुई है। कम कीमत वाली दवाओं की उपलब्धता को आम किया जा रहा है। नये नियम के लागू होने से उपभोक्ताओं को पूरी तरह से उपभोक्ता अदालत के भरोसे छोड़ने के बजाय सरकार ने ढेरों काम अपने हाथ में लेने की पहल की है। यह पहली बार दिख रहा है कि मौजूदा शासन व्यवस्था में अदालत में जाकर क्लेम कर राहत पाने वाले चुनिंदा लोगों पर फोकस की प्रवृत्ति का परित्याग किया गया है। केन्द्र सरकार ने आम उपभोक्ताओं को राहत पहुँचाने का काम खुद के हाथ में लेकर कानून प्रभावी करने वाली एजेंसियों को सक्रिय करने की ठान ली है।

लेखक तीन दशक से प्रिंट, वेब और इलेक्ट्रानिक मिडिया में सक्रिय है। विभिन्न समाचार समूहों के विशेष संवाददाता और सम्पादक के तौर पर कार्यरत रहे हैं। पी.आई.बी कोलकाता के अजय महमिया से प्राप्त

पृष्ठ 1 का शेषांश

एक संस्कृति का.....

स्थापत्य, उनकी कीर्ति आदि निषेधवादी जिहादी मानसिकता को एक घृणा से भर देती है। इसलिए वे कश्मीरी पंडितों को उनकी मातृभूमि से खदेड़ बाहर करने के बाद उनकी स्मृति को, इतिहास को तथा उनकी गौरवशाली सांस्कृतिक सम्पदा की यह जीनोसाइड के बाद उनका साँस्कृतिक सँहार (cultural genocide) है।

इस दृष्टि से देखें तो स्पष्ट होगा कि अभी हाल ही में निष्कासित कश्मीरी हिन्दुओं की कश्मीर घाटी में वापसी के सरकारी उल्लेख भर से बिदक कर अनेक आज़म तक उनके पुनर्वास का यह कहकर तीव्र विरोध क्यों किया। कहा गया कि भारत सरकार कश्मीर में मुस्लिम बहुसंख्यक के अनुपात को असंतुलित करने के साथ ही यहाँ के पारम्परिक भाईचारे, कश्मीरियत को नष्ट कर रही है। पंडित वापस कश्मीर लौटेंगे तो धार्मिक दृष्टि से आबादी का अनुपात बिगड़ जाएगा। वाह रे जिहाद के पैरोकारो, मक्कारो!

इस वर्ष स्वामी अमरनाथ यात्रा पर हमले में 8 यात्री मार डाले गये, 19 घायल हुए। यह पहली बार नहीं हुआ। अनेक बार हमले हुए हैं और दर्जनों यात्री : याद करें पिछले साल 2016 में स्वामी अमरनाथ यात्रियों पर सुनियोजित हमलों में किस तरह करीब 150 यात्री लंगरों को जला डाला गया था। तिलमुला में खीरभवानी तीर्थ पर सामूहिक हमला किया गया था। उसके बाद विष्णुपाद कौंसरनाग यात्रा का एक साजिश के तहत विरोध किया गया। विष्णुपाद कौंसरनाग यात्रा के आयोजकों को सुरक्षा की दृष्टि से सरकारी अनुमति दिए जाने के बाद हुर्रियत नेता अलीशाह गिलानी ने 2 मई को इस पर भाषण किया और भड़काई गई हिंसा के दबाव में सरकार ने यात्रा को रद्द कर दिया।

कश्मीरी पंडितों को कुलगाम (अनंतनाग) से होते हुए अहरबल के पारम्परिक रास्ते से विष्णुपाद कौंसरनाग यात्रा करने से रोकने के लिए कभी कश्मीरी हिन्दुओं के हजारों वर्ष पुराने तीर्थ होने के तथ्य को ही झुठलाया गया। कभी कौंसर (नाग) को अरबी मूल का शब्द कहकर वहाँ मस्जिद बनाये जा रहे हैं। कौंसरनाग की यात्रा की प्राचीन परंपरा को ही निराधार घोषित किया गया। सबसे हास्यास्पद बात यह कि इसे संघ द्वारा प्रायोजित यात्रा भी कहा गया। यह भी बताया गया कि कौंसरनाग विष्णुपाद यात्रा का पारम्परिक मार्ग कश्मीर घाटी में कुलगाम जिले से न होकर 300 किलोमीटर दूर जम्मू जाकर पहाड़ी मार्ग है। अर्थात कश्मीर घाटी के किसी हिन्दू को अगर कौंसरनाग विष्णुपाद यात्रा करनी हो तो उसे बजाय एक दिन के बदले चार दिन लगाकर जम्मू जाकर कौंसरनाग विष्णुपाद कश्मीरघाटी के दक्षिण में पीर पांचाल पर्वत श्रृंखला के बीच शुपयन में स्थित कपालमोचन तीर्थ से 34 किलोमीटर लम्बी और 3 किलोमीटर चौड़ी विराट पैर के आकार की एक विलक्षण झील है जिसके साथ मिथकीय आख्यान, इतिहास और लोक विश्वास। इस तीर्थ का उल्लेख नीलमतपुराण, कल्हण की राजतरंगिणी जैसे प्राचीन ग्रंथों में तो है ही, इसका उल्लेख कश्मीर के महाराजा रणवीर सिंह के तीर्थ संग्रह में भी है जिसमें कश्मीर के प्रसिद्ध 365 तीर्थों के बारे में जानकारी मिलती है। **यह पाण्डुलिपि अभी तक अप्रकाशित है और भंडारकर यूनिवर्सिटी में सुरक्षित है।**

'नीलमतपुराण' के अनुसार कौंसरनाग विष्णुपाद झील के इर्द-गिर्द बानिहाल के पश्चिम में तीन ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखर हैं जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु और इन तीनों में से पश्चिम की ओर से सबसे ऊँचा शिखर है उसे 'नौ बंधन' कहा जाता है। जल प्रलय के समय मनु की नौका हवा पानी तूफान के थपेड़े से नीलमतपुराण के अनुसार वास्तव में यहीं पर विष्णु ने मत्स्य अवतार धारण कर अपनी पीठ से मनुष्यता के बीज लिए मनु की नौका को धकिया से उसे बाँधा था।

जब 1981 में मैंने पहली बार कौंसरनाग विष्णुपाद की यात्रा की, मैं सौभाग्यशाली था कि मेरे साथ प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक और भारतविद् डॉ० टी०एन०गंजू, ब्रॉडकास्टर, कवि और अनुवादक मोहन निराश और महर्षि महेश योगी के शिष्य मोती लाल ब्रह्मचारी यात्रा में साथ थे। हम सबने 'कामायनी' पढ़ी थी। जब हमें एक स्थानीय गुज्जर ने हवा में अपनी छड़ी उठाकर इन तीनों शिखरों के बाद 'नौ बंधन' दिखाया था तो हमसे गंभीर मुद्रा में पूछा था, 'कोई कविता तो नहीं याद आ रही है तुमको ?'

उनके पूछने भर की देर थी कि मैंने और डॉ० टी०एन० गंजू ने छूटते ही ऊँचे लेकिन समवेत स्वर में पाठ शुरू किया था:–

'हिम गिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह।

मुझे याद है नीलमतपुराण और कल्हण की राजतरंगिणी के संदर्भ दे देकर गंजू साहिब और मोहन निराश ने कौंसरनाग विष्णुपाद

के मिथक और महिनाग (पवित्र जल कुण्ड) से संबंधित महात्म्य और किंवदंतियां ही नहीं सुनाई थीं बल्कि उनकी समकालीन सन्दर्भों में व्याख्याएं भी की थीं। मुझे पहली बार तभी पता चला था कि कौंसरनाग शब्द वास्तव में मूल संस्कृत शब्द 'क्रमसर नाग' का अपभ्रंश है और कश्मीर में त्रिक-सम्प्रदाय, भट्ट क्रम संप्रदाय भी प्रचलन में रहा है जिसका वर्णन आचार्य अभिनव गुप्त तंत्रालक में करते हैं।

कश्मीर में शिव का एक नाम 'क्रमेश्वर' भी है। इस कौंसरनाग विष्णुपाद सरोवर में क्रमेश्वर का वास होने से इस सम्प्रदाय के लोग यहाँ प्रतिवर्ष आष अर्चना करते थे। यहाँ पूंछ और रियासी के क्षत्रिय राजपूतों में छागल (बकरा) की बलि चढ़ाने की परम्परा रही है। शुपयन के पास कपाल-मोचन तीर्थ के पूजापाठी ब्राह्मण पारम्परिक रूपसे कौंसरनाग विष्णुपाद यात्रियों के साथ हो लेते थे। डॉ० त्रिलोकी नाथ गंजू के अनुसार बहु पठित पुजारी पंडित मोहनलाल के पास कौंसर नाग का माहात्म्य भी हुआ करता था। उस माहात्म्य के अनुसार कौंसरनाग विष्णुपाद यात्रा करने वाले को (स्वामी अमरनाथ) की यात्रा करने वाले को प्राप्त होते हैं।

इस तरह कपालमोचन तीर्थ (शुपयन) से होकर या कुल वागेश्वरी (कुलगाम) से होते हुए अहरबल प्रपात जिसका नाम नीलमतपुराण (श्लोक 282-बिल होता है जिससे विशोका नदी ठीक वैसे ही निकली बताई गयी है जैसे भागीरथी गंगा जह्नु ऋषि के मुँह से निकलने पर जाह्नवी कहलाती है। इस उपत्यका में रात गुजारने के बाद सुबह मुँह अंधेरे अहिनाग और महिनाग को पीछे छोड़ते हुए हम विष्णुपद तक की चढ़ाई चढ़कर बर्फानी जल में झिलमिलाती शब्दातीत दृश्य। अलौकिक झील। मीलों लम्बी चौड़ी इस सुरम्य झील के पानी पर छोटे-छोटे हिमखंद दूर से राजहंसों की तरह लगते हैं। डॉ० गंजू ने हमें कौंसरनाग विष्णुपाद की पश्चिमी दिशा में उस मुहाने के पास धीरे-धीरे उतरने को कहा जहाँ से कौंसरनाग से विशोका नदी (वर्तमान वितस्ता) जल में हमने स्नान किया था। पूजा की थी। किंवदंती है की यहीं पर कश्यप ऋषि ने सतीसर की विशाल जलराशि के निकास के उपरान्त कश्मीर घाटी के लोगों के कल्याण के लिए लक्ष्मी की पूजा की। इससे पूर्व कश्यप ऋषि ने श्वेतद्वीप में साधना की। कश्यप ऋषि की प्रार्थना से द्रवित होकर लक्ष्मी विशोका नदी के रूप में कौंसरनाग से बाहर आयीं। उस..... अर्थात इन दोनों पवित्र कुंडों का जल भी विशोका में जा मिला। विशोका कौण्डिन्य नदी, क्षीर नदी और वितस्ता में जा मिलती है।

यहीं कौंसरनाग विष्णुपाद के पश्चिमी मुहाने पर सविनय हाथ जोड़कर कश्यप ऋषि देवी विशोका की स्तुति करते हैं– "हे माता लक्ष्मी, तुम ही कश्मीर..... देवियों में विद्यमान हो! तुम्हारे जल से स्नान कर पापी भी मोक्ष पाते हैं।'

'नीलमतपुराण' का गहन अध्ययन करने पर पता चलता है कि कश्मीर घाटी में प्राचीनकाल से उत्सवों और यात्राओं की साल भर धूम रहती रही है। ऐसी वार्षिक यात्राओं में कौसरनाग यात्रा भी कोई अपवाद नहीं है। कश्मीर की आदि कवयित्री ललद्यद् अर्थात् ललेश्वरी चौदहवीं शताब्दी में अपने एक वाक में क्रमसर नाग का उल्लेख करती है। जिसके माहात्म्य का साहित्यिक संदर्भ सामने आता है। ललद्यद् अपने पूर्वजन्मों की स्मृति की बात करते हुए कहती है कि उसे तीन बार सरोवर एक बार सरोवर को मैंने गगन से मिले देखा। एक बार हरमुख (शिखर) को क्रमसर (शिखर) से जुड़ा एक सेतु देखा। सात बार सरोवर को शून्याकार होते हैं।

जो अलगाववादी आज यह कहने लगे हैं कि उन्होंने कभी कौंसरनाग यात्रा होते नहीं देखी है, इससे बड़ा झूठ कुछ नहीं हो सकता। जिहादी आतंकवादियों और अलगाववादियों ने 1990 में जब कश्मीर से वहाँ के मूल बाशिंदों को ही जबरन जलावतन किया, जो कि कश्मीरी पंडित थे, पूरी तरह प्रभावित रहीं हैं।

क्या जिहादियों को बताने की जरूरत है कि मुगलकाल और उसके परवर्ती युग में भी कश्मीर के शासकों ने धार्मिक यात्राएं प्रतिबंधित की थीं। रही बात इस यात्रा से पर्यावरण प्रदूषित होगा, इससे बचकाना और कुतर्क कोई नहीं हो सकता है। अभी कुछ वर्ष पहले मुगल रोड के निर्माण के लिए काटे गए, डल झील को मौत के कगार पर पहुँचाया गया, चिनार काट डाले गए, जंगलों का सफाया किया गया, हजारों हाउसबोटों का मल-मूत्र डल में.... आचार झील और विश्व प्रसिद्ध वुल्लर झील की हालत पर कोई अलगाववादी नेता, आतंकवादी सरगना बयान नहीं देता, कश्मीर बंद का आह्वान.... कौंसरनाग विष्णुपाद की यात्रा की इजाजत देने से कश्मीर की मुस्लिम अस्मिता खतरे में पड़ने वाली है, ऐसा ही खुल्लम-खुल्ला कहा गया। कोई मुँह नहीं खोलता।

ऊपर से कश्मीरियत के झूठे परचम भी फहराये जा रहे हैं। यह खुरासान की लड़ाई में गज्वाए हिंद की आहट है।

–फेस बुक वाल से।

ISSN : 2454-2121
R.N.I. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regn. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

1 से 31 अगस्त, 2017
कुल पेज **: 20**

मूल्य : 5.00
सदीनामा
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

पाठक नामा

श्री जितेन्द्र जितांशु जी

नमस्कार ! आपका अप्रैल अंक मिला। वित्तीय निरक्षरता की कीमत-जरूरत है वित्तीय साक्षरता की और उन संस्थानों के सक्रिय होने की जिनकी जिम्मेदारी वित्तीय आवारा कुत्तों को पकड़ने की जगह कपड़ने छपा है।

2. सिक्कों का शौक, व्यवसाय, इतिहास पक्षों पर लेख छापना चाहती है। सुन्दर विषय है। समाज उपयोगी है।

3. आपने मांगीलाल गणेशमल आहोर के विवाह की पत्रिका अपने पत्र में स्थान दिया। धन्यवाद इस अवसर पर छोटी सी भेंट सदीनामा को भेजी गई उसके लिए भी धन्यवाद ! यह क्रम जारी रखें।

4. 'पुस्तक समीक्षा' टापिक प्रारम्भ करने हेतु धन्यवाद !

चुनाव प्रक्रिया एक धर्मनिरपेक्ष गति है। साम्प्रदायिक क्या है। नरेन्द्र मोदी का हिन्दू राष्ट्रवादी कहना – भ्रष्ट आचरण है। धर्म एक जीवन कला है। देश का संविधान धर्मनिरपेक्ष प्रजातांत्रिक है। नरेन्द्र मोदी एवं सरकार द्वारा तीन तलाक (मुस्लिम पर्सनल ला) को खत्म करने का कदम साम्प्रदायिक नहीं है। मुस्लिम महिलाओं को अत्याचारों से मुक्त करने का सुन्दर कदम है। उसे आप साम्प्रदायिक एवं भ्रष्ट आचरण नहीं कह सकते। यही धर्मनिरपेक्ष मूल्यों की स्थापना है। सही अर्थों में यही शांति और न्याय की स्थापना है।

पुस्तक समीक्षा में प्रकाशित करें। राम पुनियानी को अवश्य भेजें।

अंधेरे के विरुद्ध मुक्तिबोध का संघर्ष मुक्तिबोध के आर्थिक मानसिक दबाबों का जिक्र करते हुए कहा कि वह आत्मचेतस से अधिक विश्वचेतस थे। कृपया अगले लेख में इसे 'अंधेरे में' कविता को भी प्रकाशित करें.

कात्यानी की कविता मुक्तिबोध का भी प्रकाशन करें। मुक्तिबोध-पुस्तिका डाक द्वारा VPP द्वारा भीजावें।

समय सुरभि अनंत, पत्रिका का अंक भीजावें।

धन्यवाद ! पत्रोत्तर अवश्य दें।

भेरुलाल जैन
42, यूरेका कालोनी, केशवापुर,
हुबली-580023
Phone ! 9448323026

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान
सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है

SADINAMA

Current Account No. 03771100200213
PUNJAB AND SIND BANK
IFSE CODE : PSIB0000377
Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)
Phone No. For SMS To Inform - 09231845289
PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37 ए, बैंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-700137, 24 Pgs. (S), W.B. India से प्रकाशित । **संपादक : जितेन्द्र जितांशु**
☎: 9231845289, 2470-4061, E-mail : jjitanshu@yahoo.com, R.N.I. No. WBHIN/2000/1974